वर्ष -15 अंक-30 प्रत्येक गुरुवार को प्रकाशित अनूपपुर 27 जुलाई से 2 अगस्त 2023 मूल्य 2.00 पृष्ठ 8 Epaper-www.fatwasamachar.com

डाक पंजी- SDL-0019/2025 RNI-MPHIN/2008/24599

फतवा

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय समाचार पत्र

आपका विश्वास

सुविचार

अगर एक रास्ता जिंदगी में बंद हो जाए तो दूसरे कई रास्ते जिंदगी तुम्हारे लिए खोल देती है।

पेज-2

पेज-3

पेज-6

संक्षिप्त खबरें

कूनो में 11 चीते बड़े बाड़े में शिफ्टः स्पेशलिस्ट कर रहे चेकअप

श्योपुर नप्र। कूनो नेशनल पार्क में लगातार हो रही चीतों की मौत से प्रबंधन चिंतित है। खुले जंगल में घूम रहे सभी चीतों को ट्रेंकुलाइज कर एक के बाद एक बड़े बाड़े में शिफ्ट किया जा रहा है। अब तक 11 चीते बड़े बाड़े में लाए जा चुके हैं। नामीबिया-दक्षिण अफ्रीका के विशेषज्ञ और वन विभाग की टीम इनका मेडिकल चेकअप कर रही है। 6 चीतों की रेडियो कॉलर आईडी भी हटा दी गई है। स्पेशलिस्ट टीम के अनुसार, शनिवार (22 जुलाई) को पावक चीते को बड़े बाड़े में लाया गया था। शुरुआती जांच में उसे पूरी तरह स्वस्थ पाया गया। अभी उसे बड़े बाड़े में ही रखा जाएगा। डिविजनल फॉरेस्ट ऑफिसर (डीएफओ) प्रकाश वर्मा ने रविवार (23 जुलाई) को प्रेस नोट जारी कर इसकी जानकारी दी।

जेल में वेश्यावृत्ति, चरस-गांजा और शराब सप्लाई!

दमोह नप्र। जिला जेल में चरस, गांजा, शराब की सप्लाई और वेश्यावृत्ति के आरोप लगे हैं। ये आरोप जेल के ही एक प्रहरी ने लगाए है। उसका कहना है कि ये सब जेल में बंद बसपा विधायक रामबाई का देवर चंदू उर्फ कौशलेंद्र सिंह कुछ जेल कर्मियों की मदद से कर रहा है। प्रहरी के आरोपों के बाद जेल प्रशासन में हड़कंप मच गया है। जेलर ने इस मामले पर सफाई देते हुए आरोपों को झूठा बताया है। वहीं विधायक रामबाई ने कहा कि चुनाव नजदीक हैं। इसलिए उनकी छवि खराब करने के लिए झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं। बता दें कि जिला जेल में पदस्थ जेल प्रहरी राम कुमार शाक्य ने शनिवार को जेल में वेश्यावृत्ति और अनैतिक गतिविधियां चलने के आरोप लगाए थे। जेल प्रहरी राम कुमार शाक्य के आरोपों पर जेलर सीएल प्रजापति ने कहा कि वह पहले से विवादित है। उस पर दो आपराधिक प्रकरण भिंड देहात थाना में दर्ज हैं।

रायगढ़ लैंडस्लाइड में मरने वालों की संख्या हुई 27, बचाव जारी

नवी मुंबई एजेंसी। रायगढ़ लैंडस्लाइड में मरने वालों की संख्या 27 पर पहुंच गई है। हालांकि यहां पर घटना के तीसरे दिन भी बचाव कार्य जारी है। मिली जानकारी के अनुसार अभी भी 78 लोग लापता बताए जा रहे हैं। इसमें कई परिवारों के हताहत होने की आशंका है। भारी बारिश के चलते महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में बुधवार की देर रात लैंडस्लाइड हुआ था। अधिकारियों ने कहा कि खोज और बचाव अभियान के तीसरे दिन मलबे से छह और शव बरामद हुए। अधिकारियों ने कहा कि महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के इरशालवाड़ी गांव में भूस्खलन में 78 लोगों के अभी भी लापता होने की आशंका है। इस भीषण हादसे में कई परिवारों का पूरी तरह सफाया हो गया है। कई बच्चे तो ऐसे हैं जो इस भयानक प्राकृतिक आपदा के वक्त अपने घरों पर नहीं होने के कारण बच गए हैं।

म.प्र. स्थानीय निकाय चुनाव में आधी सीटें महिलाओं के लिए रिजर्व करने वाला पहला राज्य

जनता का सुख-दुख मेरा सुख-दुख : मुख्यमंत्री

विकास पर्व में पूरे प्रदेश में चल रहा विकास का महायज्ञ

चकल्दी में खुलेगा महाविद्यालय

चकल्दी में 81 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का भूमि-पूजन लोकार्पण

पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना से तीन गाँवों के 661 किसानों की 889 हे. भूमि होगी सिंचित

भोपाल नप्र। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि जनता का सुख-दुख मेरा सुख-दुख है। प्रदेश की जनता की खुशहाली के लिए मैं दिन-रात काम कर रहा हूँ। विकास पर्व के तहत पूरे प्रदेश में विकास का महायज्ञ चलाया जा रहा है। अनेक निर्माण एवं विकास कार्यों का शिलान्यास तथा भूमि-पूजन किया जा रहा है। सड़क, बिजली, पेयजल, सिंचाई के लिए पानी तथा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री चौहान चकल्दी में विकास पर्व कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने चकल्दी में 81 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण/भूमि-पूजन किया और चकल्दी में महाविद्यालय खोलने की घोषणा की। अनेक योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ भी वितरित किए। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि पहले सिंचाई की व्यवस्था नहीं होने के कारण उत्पादन कम होता था। खेती में किसानों को कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। अब अनेक सिंचाई परियोजनाओं से हर किसान के खेत तक पानी पहुँचाने का काम किया जा रहा है। आज चकल्दी में लोकार्पित पाटतलाई उद्वहन सिंचाई योजना से पाटतलाई, अमीरगंज एवं पलासपानी जैसे पहाड़ी गाँवों के खेतों तक सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध होगा और तीनों गाँवों के 661 किसानों की 889 हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचित होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जमोनिया और चतरकोटा सिंचाई योजना का भी आज भूमि- पूजन किया गया है। धीरे-धीरे विभिन्न सिंचाई योजनाओं से हर किसान के खेत तक सिंचाई के लिए पानी पहुँचाया जाएगा। पहले पीने के पानी के लिए भी कई परेशानियों का सामना करना पड़ता था। अब नर्मदा का जल घरों तक पहुँचाया जा रहा है। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि किसी समय इस पूरे इलाके में आने-जाने के रास्ते नहीं थे। कहीं भी आने-जाने में पूरा दिन लग जाता था। जनता के लिए यह अकल्पनीय था कि यहाँ अच्छी सड़कें बनेंगी।

कृषि क्षेत्र में प्रदेश में क्रांति हो रही

मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि कृषि क्षेत्र में प्रदेश में क्रांति हो रही है। किसान वर्ष में तीन फसल ले रहे हैं। राज्य में मूंग खरीदी का कार्य चल रहा है। किसान-कल्याण योजना में छोटे से छोटे किसान को वर्ष में 12 हजार रुपए की राशि प्राप्त हो रही है। पूर्व सरकार ने किसानों पर कर्जा चढ़ा दिया था, जिसे उतारने का कार्य किया गया। हमारी सरकार में कृषि का उत्पादन बढ़ा है और किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है। किसानों को 18 प्रतिशत ब्याज पर मिलने वाला फसल ऋण अब शून्य प्रतिशत ब्याज पर दिया जा रहा है।

निचले इलाकों से लोगों को हटाया गया

दिल्ली में यमुना फिर खतरे के निशान से ऊपर, हिमाचल में बाढ़ से सात मौतें

नई दिल्ली एजेंसी। दिल्ली में यमुना का जलस्तर फिर खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया है। रविवार सुबह हथिनीकुंड बैराज से 2 लाख क्यूसेक पानी छोड़े जाने के बाद जलस्तर सुबह 7 बजे 205.81 मीटर तक था, लेकिन शाम 4 बजे वाटर लेवल खतरे के निशान (205.33 मीटर) से ऊपर निकलकर 206.31 मीटर पर पहुंच गया।

निचले इलाकों में रहने वाले जो लोग पानी कम होने के बाद अपने घरों में लौट आए थे, प्रशासन ने उन्हें फिर राहत शिविरों में भेज दिया है। दिल्ली में शाम को कई इलाकों में बारिश हुई है। इससे यमुना का वाटर लेवल और बढ़ सकता है। हिमाचल के कुल्लू व शिमला में बादल फटने की घटनाएं हुईं, वहीं अलग-अलग हादसों में 7 मौतें भी हुई हैं। इससे प्रदेश में मानसून में मरने वालों की संख्या 154 हो गई है।

गुजरात के जूनागढ़ शहर में शनिवार को चार घंटों में हुई 10 इंच बारिश से बाढ़ आ गई है। हालांकि बारिश बंद है, लेकिन कई इलाकों में अब भी पांच फीट तक पानी भरा हुआ है।

महाराष्ट्र के इर्शालवाड़ी गांव में लैंडस्लाइड के चार दिन बाद भी 57 लोग लापता हैं। मरने वालों की संख्या 27 हो गई है। यवतमाल में बाढ़ में फंसे 45 लोगों को एयरफोर्स के दो हेलिकॉप्टर्स की मदद से एयरलिफ्ट किया गया है।

किसान को धमकी देकर लूटे 2 हजार किलो टमाटर

चेन्नई में बेचे; कपल अरेस्ट, तीन और आरोपियों की तलाश जारी

बेंगलुरु एजेंसी। बेंगलुरु में 8 जुलाई को 2 हजार किलो टमाटर से भरे ट्रक को लूटने के मामले में कर्नाटक पुलिस ने एक कपल को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार कपल की पहचान वेल्लोर के रहने वाले भास्कर और उसकी पत्नी सिंधुजा के रूप में हुई है। मामले में तीन अन्य आरोपी रॉकी, कुमार और महेश की तलाश जारी है। किसान चित्रदुर्ग जिले के हिरियूर शहर से कोलार बाजार में टमाटर ले जा रहा था। टमाटरों पर नजर पड़ने के बाद बदमाशों ने गाड़ी का पीछा किया था। उन्होंने वाहन को रोक लिया और किसान और

ड्राइवर के साथ मारपीट की। बदमाशों ने आरोप लगाया कि ट्रक ने उनकी गाड़ी को टक्कर मारी है। उन्होंने किसान से पैसों की मांग की और धमकाया। इसके बाद पैसे ट्रांसफर करवा लिए। वे किसान के साथ ट्रक में सवार हो गए। बाद में बदमाशों ने किसान को जबरदस्ती बाहर धकेल दिया था और टमाटर लदा ट्रक लेकर फरार हो गए।

मध्यप्रदेश में मौसमः भोपाल, रतलाम समेत कई जिलों में तेज बारिश

नर्मदापुरम में झरने में बहा युवक, श्योपुर में पार्वती उफनी

मध्यप्रदेश के कई इलाकों में रविवार को भी बारिश का दौर जारी रहा। भोपाल में दिनभर मौसम साफ रहने के बाद शाम को तेज बारिश शुरू हो गई। रतलाम में दिनभर में करीब 1 इंच पानी गिरा। इसके अलावा नर्मदापुरम, जबलपुर, गुना, दमोह, मंडला, छिंदवाड़ा, बैतूल और उज्जैन जिले में हल्की बारिश हुई है।

श्योपुर जिले में पार्वती नदी का जलस्तर बढ़ गया है। जिले का राजस्थान से संपर्क कट गया है। इधर नर्मदापुरम के शाहगंज के पास अमरगढ़ झरने में 29 साल का युवक डूब गया। गोताखोर उसकी तलाश में जुटे हैं। मौसम विभाग ने रविवार को इंदौर समेत 10 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के मुताबिक, प्रदेश में बारिश कराने वाले चार सिस्टम एक्टिव हैं। इस वजह से आने वाले दिनों में बारिश जारी रहेगी।

बुरहानपुर के तीन गांवों में बाढ़

बुरहानपुर में ताप्ती नदी पर बना हतनूर पुल डूबने से 10 से ज्यादा गांव का जिले से संपर्क टूट गया है। शनिवार रात जिले के फोपनार गांव में उतावली नदी का पानी घुस गया। बाढ़ में फंसे 250 परिवारों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया। यहां पूर्व मंत्री अर्चना चिटनीस ने पहुंचकर जायजा लिया। जिले के जसौंदी में अंजनडोह नदी पर बने तालाब के ओवरफ्लो होने से बाढ़ आ गई।

हरदा में बाइक समेत युवक बहा

हरदा में हटकलां के पास शनिवार रात 9 बजे स्यानी नदी की पुलिया को पार करते समय युवक? बाइक समेत बह गया। छीपाबड़ पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। अंधेरे की वजह से? सर्चिंग में दिक्कत आ रही थी। रविवार सुबह टीम ने दोबारा सर्च शुरू की है। बताया जा रहा है कि पुलिया पर 4 फीट पानी था। शनिवार को अजनाल नदी में बाढ़ आ गई। इस कारण छह घंटे नर्मदापुरम-खंडवा स्टेट हाईवे बंद रहा।

दलित के मुंह में भर दिया मानव मल, पंचायत ने भी जुर्माना लगाया

छतरपुर नप्र। प्रदेश में एक दबंग ने दलित युवक के मुंह में गंदगी (मल) भर दी। उससे भी दिल नहीं भरा तो पंचायत ने भी पीडित पर जुर्माना ठोक दिया। दबंगों द्वारा दलितों शोषितों के साथ अभद्रता करने के मामले थम नहीं रहे हैं। छतरपुर जिले के महाराजपुर थाना अंतर्गत ग्राम बिकौरा में नाली निर्माण कार्य के दौरान विवाद में दबंग ने देशराज अहिरवार नामक युवक के मुंह एवं कपड़ों में गंदगी (मल) लाकर भर दी।

यही नहीं, जब उसने गांव की पंचायत में गुहार लगाई तो पंचायत ने भी दबंग का पक्ष लिया व उस पर 600 रुपये जुर्माना लगाकर राशि वसूल की गई। देशराज की जब किसी ने नहीं सुनी तो समाज के कुछ व्यक्तियों के साथ उसने थाने जाकर शिकायती आवेदन दिया है। पीड़ित पक्ष का कहना है कि गांव में पटेल समाज की चलती है, जैसा वे चाहते हैं, वैसा ही गांव में होता है। उधर, एएसपी विक्रम सिंह ने कहा कि थाने में आवेदन आया है, इसमें मैला खिलाने की बात नहीं है, हम मामले की जांच कर रहे हैं। थाने में दिए गए आवेदन के मुताबिक बिकौरा में शासकीय नाली निर्माण हो रहा है। वहीं, गांव का दबंग रामकृपाल पटेल टैंकर के पानी से नहाने आ गया। नाली निर्माण में लगा देशराज पिता राजाराम अहिरवार मिक्सर मशीन में ग्रीस लगा रहा था। उसके हाथ से थोड़ा सा ग्रीस उचटकर रामकृपाल पटेल के ऊपर गिर गया तो वह आपा खो बैठा और देशराज को जातिसूचक गालियां देने लगा।

बस-तेल टैंकर के बीच भिडंत में 5 लोगों की मौके पर ही मौत

तिरुपति एजेंसी। आंध्र प्रदेश के अन्नामय्या जिले में एक बस और तेल टैंकर के बीच जोरदार टक्कर होने से पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई है। साथ ही आठ अन्य घायल हो गए जिन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि आंध्र प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम (एपीएसआरटीसी) की एक बस को पुलमपेट के पास राजमपेट-तिरुपति राष्ट्रीय राजमार्ग पर विपरीत दिशा से आ रहे एक ट्रक ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि इस हादसे में दो महिलाओं समेत बस में सवार पांच यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि आठ अन्य घायल हो गए। घायलों को राजमपेट के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मृतकों में से तीन की पहचान कर ली गई हैं, इनमें 62 वर्षीय जी. श्रीनिवासुलु, 65 वर्षीय बाशा और 45 वर्षीय शेखर के रूप में पहचान हुई।

तीर्थ यात्रियों से भरा वाहन पलटा- 1 की मौत, 4 महिलाएं गंभीर रूप से घायल; वृंदावन से दमोह लौट रहे थे सभी

दमोह नप्र। टीकमगढ़-सागर हाईवे पर रविवार को तीर्थ यात्रियों से भरा वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया। घटना बड़ागांव थाना क्षेत्र के गड़ाघाट नाले के पास हुई। हादसे में 55 वर्षीय राजेंद्र आठिया की मौत हो गई, जबकि चार महिलाएं गंभीर रूप से घायल हैं। सभी लोग मथुरा-वृंदावन से तीर्थ यात्रा कर अपने घर दमोह लौट रहे थे। बड़ागांव थाने में पदस्थ एएसआई राजवीर यादव ने बताया कि हाईवे रोड पर बड़ागांव से आगे गड़ाघाट पुल के पास वाहन पलटने की सूचना मिली। मौके पर जाकर देखा तो गामा वाहन सड़क किनारे पड़ा था। स्थानीय लोगों की मदद से वाहन में सवार लोगों को बाहर निकाला गया। गंभीर रूप से घायल राजेंद्र आठिया को इलाज के लिए जिला अस्पताल रवाना किया गया, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। घटना में 4 महिलाएं भी गंभीर रूप से घायल हैं। चारों को तत्काल 108 एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल रवाना किया गया।

गाड़ी में सवार थे 14 लोग

पुलिस ने बताया कि गाड़ी में 14 लोग सवार थे। मामूली रूप से घायल लोगों को प्राथमिक उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बड़ागांव में भर्ती कराया। पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी है।

दमोह जिले के निवासी हैं तीर्थयात्री

पुलिस ने बताया कि पूछताछ में पता चला है कि वाहन में सवार सभी लोग दमोह जिले के मंडला खिरिया के रहने वाले हैं। सभी लोग तीर्थ यात्रा करने मथुरा वृंदावन गए थे। आज गामा वाहन से वापस अपने गांव लौट रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया।

खास खबर

9 महीने में 4.33 लाख को मिली नौकरी

पीएम ने 70 हजार युवाओं को दिए नियुक्ति पत्र

नई दिल्ली एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 70 हजार से अधिक युवाओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए नियुक्ति पत्र दिए। बीते 9 महीने में केंद्र सरकार का ये 7वां रोजगार मेला है, जो देश के 44 स्थानों पर लगाया गया है। 13 केंद्रीय मंत्री भी रोजगार मेले का हिस्सा बने हैं। केंद्र सरकार का दावा है कि अब तक 4.33 लाख लोगों को नौकरी दी जा चुकी है।

रोजगार मेले के जरिए पीएम मोदी ने युवाओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा, 'आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। देश विकास के पथ पर चल रहा है, ऐसे में सरकारी कर्मचारी के रूप में काम करने का अवसर मिलना बहुत सम्मान की बात है। इस देश के लोगों ने भारत को एक विकसित देश बनाने का संकल्प लिया है। अगले 25 साल भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। अर्थव्यवस्था के विस्तार में हमारे बैंकिंग सेक्टर की बहुत बड़ी भूमिका होती है। आज भारत उन देशों में से एक है, जहां का बैंकिंग सेक्टर सबसे मजबूत माना जाता है। लेकिन 9 वर्ष पहले ऐसी स्थिति नहीं थी। जब सत्ता का स्वार्थ राष्ट्रहित पर हावी होता है, तब किसी बर्बादी होती है, कैसा विनाश होता है, इसके कई उदाहरण देश में है। हमने सरकारी बैंकों के मैनेजमेंट को सशक्त किया। हमने देश में छोटे-छोटे बैंकों को जोडकर बड़े बैंकों का निर्माण किया। हमने सुनिश्चित किया है कि बैंक में लोगों की 5 लाख रुपए तक की राशि कभी डूबे। पीएम मोदी ने कहा कि 9 साल पहले ये फोन बैंकिंग मेरे और आपके जैसे सामान्य नागिरकों के लिए नहीं था। उस समय एक खास परिवार के करीबी, कुछ ताकतवर नेता बैंक को फोन कर अपने चहेतों को हजारों करोड़ रुपए का लोन दिलवाया करते थे। पीएम ने कहा कि सरकार ने बैंकरप्सी कोड जैसे कानून बनाए, ताकि अगर कोई कंपनी बंद हो तो बैंकों का कम से कम नुकसान हो। इसके साथ ही हमने गलत काम करने वालों पर शिकंजा भी कसा। बैंकों को लूटने वालों की संपत्ति जब्त कर ली। जिन सरकारी बैंकों की चर्चा हजारों करोड़ के नुकसान के लिए होती थी, एनपीए के लिए होती थी, आज उनकी चर्चा रिकॉर्ड प्रॉफिट के लिए हो रही है।

गर्मी के चलते पाकिस्तानी महिला सीमा हैदर की तबीयत बिगड़ी

नई दिल्ली एजेंसी। भारत की सीमा में अवैध रूप से दाखिल हुई पाकिस्तानी महिला सीमा हैदर की शुक्रवार की शाम तबीयत अचानक बिगड़ गई। इस कारण वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गई। कस्बे के ही एक क्लीनिक संचालक द्वारा घर पर ही उसका उपचार किया जा रहा है। सीमा से मिलने के लिए शनिवार को भी बड़ी संख्या में लोग रबूपुरा में उसके घर पर पहुंचे। तबीयत खराब होने के कारण लोगों को निराशा हाथ लगी। सचिन के चाचा बीरबल ने बताया कि शुक्रवार को सारा दिन मीडियाकर्मियों से बातचीत के बाद गर्मी के चलते शाम को उसकी तबीयत अचानक बिगड़ गई। स्थानीय डॉक्टर ने जांच के बाद ब्लड प्रेशर कम व कमजोरी होना बताया है। घर पर ही उसे ग्लूकोस चढ़ाया जा रहा है। ज्यादा बोलने से गले में भी सूजन आ गई।

अर्धनग्न कर युवक को पीटाः मुंह से उठवाए जूते- सरपंच पति ने मारे मुक्के

किसी को बताने पर SC-ST एक्ट में फंसाने की दी धमकी

रीवा नप्र। रीवा में एक युवक के साथ बेरहमी से मारपीट का वीडियो सामने आया है। उसे अर्धनग्न कर डंडे और घूसों से पीटा गया। मुंह से जूते उठवाए। मारपीट करने वाला स्कूल शिक्षा विभाग में क्लर्क है। पिटाई के दौरान आरोपी ने पीड़ित का वीडियो भी बनवाया। पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। शनिवार को आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया।

मामला हनुमना थाना क्षेत्र के पिपराही ग्राम पंचायत का है। वीडियो दो साल पुराना बताया जा रहा है। आरोपी जवाहर सिंह (55) प्रतापगंज शासकीय स्कूल में क्लर्क है। उसकी पत्नी सरपंच है। दो साल पहले तक 35 साल का युवक सरपंच का पिकअप वाहन चलाता था। इसी दौरान उसने सरपंच के घर के पड़ोस में जमीन खरीद ली थी। जमीन पर सरपंच के परिवार का कब्जा था।

इस कारण जवाहर सिंह उससे खुन्नस रखने लगा। वह युवक से अक्सर लेनदेन को लेकर बहस करता था।

वीडियो मई 2021 का बताया जा रहा है, जो अब सामने आया है। जवाहर सिंह ने पीड़ित को अपने घर बुलाया। पीड़ित उसके घर पहुंचा तो आरोपी उससे कहने लगा, जमीन भले ही बगल में खरीद लिए हो, लेकिन कब्जा नहीं कर पाओगे। यह जमीन हम लोगों के कब्जे में है। विरोध करने पर जवाहर ने युवक को पीटना शुरू कर दिया।

संपादकीय

चीतों की मौत चिंता की बात

सरकार ने बाघों की तरह चीतों के संरक्षण के लिए भी कदम उठाने की बात की है। पिछले दिनों कूनो राष्ट्रीय उद्यान में जब लगातार कई चीतों की मौत की खबर आई, तो स्वाभाविक ही पर्यावरणविदों और वन्यजीव संरक्षण से जुड़े लोगों के लिए यह चिंता का विषय बन गया। एक आशंका यह जताई गई कि उन्हें जो रेडियो कालर लगाया गया है, उसकी वजह से उनके भीतर संक्रमण हुआ और यह उनकी मौत का कारण बना। कुछ विशेषज्ञों के मुताबिक, रेडियो कालर के डिजाइन की वजह से चीतों को घाव हो गया हो सकता है, जिसे समय रहते ठीक नहीं किया जा सका। कई बार संक्रमण के जटिल स्थिति में पहुंच जाने के बाद उसे संभालना मुश्किल हो जाता है। हालांकि अभी यह अध्ययन का विषय है कि संक्रमण का मुख्य कारण रेडियो कालर ही है, फिर भी इससे जुड़ी आशंकाओं की वजह से छह चीतों में से रेडियो कालर को स्वास्थ्य परीक्षण के मकसद से फिलहाल निकाल दिया गया है। लेकिन पर्यावरण मंत्रालय ने चीतों की मौत में इसे एक वजह बताने को अवैज्ञानिक भी बताया है। गौरतलब है कि आमतौर पर वन्यजीवों पर नजर रखने के लिए उन्हें रेडियो कालर लगाए जाते हैं। कई बार या तो पशु का शरीर किसी बाहरी यंत्र के साथ संतुलन नहीं बिठा पाता या फिर उसकी बनावट के चलते कटने से घाव बन जाता है। ऐसी स्थिति में अगर समय पर उसे इलाज नहीं मिल पाता तो उसका जीवन संकट में पड़ सकता है। कई वन्यजीवों के शरीर की बनावट बेहद संवेदनशील होती है और आबोहवा बदलने का उस पर असर पड़ सकता है। किसी पशु पर नजर रखने के लिए कोई यंत्र उसके शरीर की संरचना के अनुकूल या प्रतिकूल भी साबित हो सकता है। दरअसल, सुचिंतित तरीके से किसी यंत्र को ऐसे प्रयोग से पहले परीक्षणों के कई स्तर से गुजारा जाता है, ताकि वह किसी वन्यजीव के लिए नुकसानदेह साबित न हो। लेकिन यह कहना कई बार मुश्किल हो जाता है कि इस तरह के यंत्र किस पशु के लिए कितना अनुकूल साबित होंगे। ऐसे मामले भी अक्सर सामने आते रहे हैं जिनमें चीता या बाघ जैसे संरक्षित पशु प्राकृतिक कारणों की वजह से भी बीमार हो जाते हैं और समय पर इलाज न मिल पाने की वजह से उनकी मौत हो जाती है। कूनो राष्ट्रीय उद्यान में लाए गए चीते निश्चित रूप से देश में पारिस्थितिकी संतुलन की दिशा में एक ठोस पहल है, लेकिन इसके साथ-साथ चीतों के संरक्षण के लिए भी जरूरी इंतजाम करना सरकार का दायित्व होना चाहिए। प्रकृति की अपनी गति होती है और समय-समय पर भिन्न कारणों से होने वाले उतार-चढ़ावों का असर सभी जीवों पर पड़ता रहा है। खासतौर पर वन्यजीवों के मामले में कई बार स्थितियां ज्यादा संवेदनशील होती हैं। कुछ पशु-पक्षी अनुकूल पर्यावरण में ही सुरक्षित रहते हैं। दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया से लाए गए बीस चीतों में कुछ के लिए शायद यहां के वातावरण से तालमेल बिठा पाना मुश्किल रहा और इसीलिए उनके जीवन और स्वास्थ्य के सामने कई तरह की जटिलताएं खड़ी हो रही हैं। हालांकि सरकार और संबंधित महकमे इसके कारणों की खोज और उन्हें बचाने के लिए जरूरी उपाय करने में लगे हैं , लेकिन देखते-देखते बीस में से आठ चीतों की मौत के बाद यह सवाल खड़ा हुआ है कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है। सरकार ने बाघों की तरह चीतों के संरक्षण के लिए भी चीता परियोजना का समर्थन करने के लिए कई कदम उठाने की बात की है, जिसमें बचाव, पुनर्वास, क्षमता निर्माण आदि की सुविधा के साथ चीता अनुसंधान केंद्र की स्थापना भी शामिल है। मगर यह देखने की बात होगी कि आने वाले वक्त में ऐसी कवायदों से जमीनी स्तर पर कैसे नतीजे सामने आते हैं!

चित चोर चित्तौड़–चहुं ओर प्रभाष

लेखक
गौरव अवस्थी

> चाय की चुस्कियों के बीच भाई राकेश सिंह ने सूचना दी- बस थोड़ी देर और! खैर, इंतजार खत्म हुआ और दो बसें आ पहुंची। जाने और जानने की जल्दी में जल्दी-जल्दी सबने सामान धरा और बस में स्थापित। दस मिनट में प्रकिया पूरी और शुरु हो गई प्रभाष प्रसंग से जुड़ी एक और यादगार बनने वाली चित्तौड़ यात्रा। बच्चों में प्रभाष स्मृति का बीजारोपण और हम जैसों को खाद-पानी का सुयोग। यात्रा के अर्द्ध भाग में बस के अंदर सर्वोदयी रमेश चंद शर्मा के सर्वोदय गीत-'हिम्मत से पतवार संभालो फिर क्या दूर किनारा ओ माझी' और ग्राम दान से बन जाएगा गोकुल अपना गांव रे.. की मनमोहक प्रस्तुति ने कुछ और ही माहौल बना दिया। होते-करते रात 11 बजे हम सब चित्तौड़ मेवाड़ विवि के परिसर में दाखिल हो ही गए। 12 घंटे से अधिक इस यात्रा की थकान बड़ों में न छोटों में। पुरुषों में न स्त्रियों में। कमरे में सामान रख, मुंह हाथ धोकर सब उसी दिशा में बढ़ चले, जिधर अन्नपूर्णा माई का वास था।

चौदह बरस की निरंतरता कम नहीं होती। दिल्ली, इंदौर होते हुए 'यादों की बारात' इस साल चित्तौड़ पहुंच रही थी। प्रसंग वही प्रभाष जोशी जी की यादों से जुड़ने का। 15 जुलाई (प्रभाष जी की जयंती) को देश का 'दिल' दिल्ली जब पूरी तरह जागी भी नहीं थी, तब हिमाचल भवन के सामने उनके (प्रभाष जी) अनुयायियों की तरुणाई अंगड़ाई ले चुकी थी। एक-एक कर लोग पहुंच रहे थे। कई तो समय से पहले ही जम गए। इन्हीं में एक यह अकिंचन भी था। प्रभाष प्रसंग में जाने वालों में तीन पीढ़ियां- पहली, जिन्होंने उनके संग सत्संग या सत्कार्य किए। दूसरी, वह जो कुछ समय के लिए ही सही उनका सानिध्य सुख प्राप्त और तीसरी, नाम-काम-धाम से प्रभावित। तीन वर्ग-पुरुष, महिला और बच्चे। बस से जाने वालों में प्रभाष जी के पुत्र संदीप और पुत्रवधू उमा जोशी भी। दोनों उन्हीं की तरह अहम-वहम से दूर।

बसों की प्रतीक्षा बरबस हर वाहन की घर्र-घर्र पर हमारी ही क्या सभी की निगाह आड़ी-तिरछी कर देती। बस यात्रियों की इसी भीड़ के बीच एक कम वजनी (अंडर वेट) महिला बेझिझक पेट के लिए सभी से 'वजन' तुलवाने का अनुरोध कम गिड़गिड़ा सी ज्यादा रही थीं। उधर, एक एकांत में कलाकार आदित्य अपनी कला को निखारने की मौन साधना में रमे थे। यह हमें पता भी न चलता अगर युगवार्ता और नवोत्थान के संपादकीय विभाग के सदस्य छोटे कद और बड़े संकल्प वाले तिवारी जी (पूरा नाम नहीं पता) यह कहकर ध्यान आकर्षित न करते- 'आपकी फोटो बन गई..' कुरूप हो या सुरूप। अपनी फोटो के लालच से भला कौन ऊपर? चाय की चुस्कियों के बीच भाई राकेश सिंह ने सूचना दी- बस थोड़ी देर और! खैर, इंतजार खत्म हुआ और दो बसें आ पहुंची। जाने और जानने की जल्दी में जल्दी-जल्दी सबने सामान धरा और बस में स्थापित। दस मिनट में प्रकिया पूरी और शुरू हो गई प्रभाष प्रसंग से जुड़ी एक और यादगार बनने वाली चित्तौड़ यात्रा। बच्चों में प्रभाष स्मृति का बीजारोपण और हम जैसों को खाद-पानी का सुयोग। यात्रा के अर्द्ध भाग में बस के अंदर सर्वोदयी रमेश चंद शर्मा के सर्वोदय गीत-'हिम्मत से पतवार संभालो फिर क्या दूर किनारा ओ माझी' और ग्राम दान से बन जाएगा गोकुल अपना गांव रे.. की मनमोहक प्रस्तुति ने कुछ और ही माहौल बना दिया। होते-करते रात 11 बजे हम सब चित्तौड़ मेवाड़ विवि के परिसर में दाखिल हो ही गए। 12 घंटे से अधिक इस यात्रा की थकान बड़ों में न छोटों में। पुरुषों में न स्त्रियों में। कमरे में सामान रख, मुंह हाथ धोकर सब उसी दिशा में बढ़ चले, जिधर अन्नपूर्णा माई का वास था। बिल्कुल वैसे ही जैसे- चल पड़े उधर ही कोटि पग...।

रात में अन्नपूर्णा माई से मुलाकात के वक्त ही नाश्ते के लिए सुबह साढ़े आठ बजे की ताकीद कर दी गई थी। सो, सब तैयार। भरपेट स्वादिष्ट नाश्ते के बाद शुरू हुआ सिलसिला प्रभाष प्रसंग का। विवि के महाराणा प्रताप सभागार में सबसे पहले वही 'कबीर गायन' जो प्रभाष जी की पसंद था और जीवन का आधार भी। पहले विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट विभाग के अध्यक्ष डॉ. त्रिगुनातीत जैमिनी, हरिओम गंधर्व व रोशनी कसौधन की प्रभावी प्रस्तुति और बाद में भीलवाड़ा की सांस्कृतिक संस्था रसधारा के कलाकारों की प्रार्थनाएं । मुख्य समारोह के पहले लोक गायक प्रहलाद सिंह टिपानिया ने कबीर के पद सुंदर और मधुर वाणी में सुनाकर एकबार फिर मंत्र मुग्ध कर दिया। यह वही टिपानिया हैं, जिन्हें प्रभाष जी ने ही पहचान दिलाई और सही-सच्चे मुकाम तक पहुंचाया। चित्तौड़ की अपनी यह पहली यात्रा थी। मेरी ही तरह पता नहीं कितनों की होगी? चित्तौड़ की लड़ाइयां विश्व प्रसिद्ध हैं। मौर्यवंशी, गुहिलवंशी, राजपूताना, मुगलों और गुजरात के सोलंकी शासकों के अधीन रह चुके चित्तौड़ की गाथाएं तो खूब हैं पर पन्ना धाय का अध्याय वाकई में चित्त चुरा लेता है। इतिहास में ऐसा कोई दूसरा अध्याय कहां? इस समृद्ध इतिहास के बावजूद चित चोर चित्तौड़ की इस यात्रा में चहुं ओर प्रभाष जी ही थे। बलिया के सांसद वीरेंद्र सिंह हों या पूर्व सांसद महेश चंद्र शर्मा या केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान या पद्मश्री विजय दत्त श्रीधर। सब उन्हीं गुणों का गान कर रहे थे, जो प्रभाष जी के सरल-तरल-विरल व्यक्तित्व में समाए थे। चूंकि किसी काम को करने के लिए एक नाम जरूरी है। कहने के लिए इस सब आयोजन का करता-धरता तो प्रभाष परंपरा न्यास है पर मेरुदंड तो राम बहादुर राय जी ही हैं। प्रभाष जी की तरह ही नाम से ज्यादा काम पर ध्यान। यकीन न हो तो 13हवें प्रसंग में बीएचयू के प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी के प्रभाष जोशी स्मारक व्याख्यान की उस मुद्रित 'पुस्तिका' पर गौर फरमाएं, जिसमें नाम न परंपरा न्यास का है, न राम बहादुर राय या अन्य किसी का। परंपरा ऐसे ही बनती है, बचती है और बढ़ती भी। अक्सर देखा जाता है कि नाम के फेर में काम पीछे छूट जाते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि काम करने वालों को नाम बताने की जरूरत नहीं पड़ती। आयोजन के लिए चित्तौड़ के चुनाव पर कुछ सवाल उठे। यह भी राय साहब के संबोधन से ही सबको या कहें खासतौर से हमें मालूम चला। इसीलिए प्रभाष प्रसंग चित्तौड़ में क्यों? का जवाब राय साहब को देना ही था। राय साहब ने दिया भी-'इसलिए कि मेवाड़ विवि के कुलाधिपति डॉ अशोक कुमार गदिया जोशीले हैं और जिद्दी भी। उन्होंने अपने विवि के गांधी संग्रहालय को प्रभाष जी की स्मृति से जोड़ा है। प्रभाष जोशी स्मृति गांधी संग्रहालय का उद्घाटन प्रभाष प्रसंग के कार्यक्रम के अवसर पर ही संपन्न कराने का उनका संकल्प था। कई वर्षों से यह संकल्प अधूरा था। इसलिए उनकी इच्छा पर ही इस बार का प्रभाष प्रसंग चित्तौड़ में।' प्रभाष जी की स्मृतियों से जुड़े इस संग्रहालय की बाहरी दीवार पर संग्रहकर्ता कलाकार सिद्दीक अहमद मंसूरी ने गांधी जी के 151 चित्र बनाकर न केवल अपनी कला बल्कि अपनी गांधीवादिता का प्रमाण भी दिया है।

देश और दुनिया में गांधी जी से जुड़े तमाम संग्रहालय हैं पर अपनी तरह का यह अनूठा संग्रहालय है। यहां द स्टेट्समैन में 1948 का वह अंक भी संजो कर रखा गया है जिसमें बापू के शहीद होने की खबर छपी थी। हमने कौसानी का वह गांधी संग्रहालय भी देखा है, जहां गांधी जी ने कई दिन बिताए थे। इसमें और उसमें मूलभूत फर्क यह दिखा कि वहां चित्र संजोए गए हैं और यहां बनाए। विवि के संग्रहालयों की देखरेख करने वाली महानिदेशक डॉ चित्रलेखा सिंह को भी इसके लिए खूब सराहना मिलना भी इस बात का प्रमाण है कि अच्छे काम के कद्रदान समाज में आज भी हैं। यह भी प्रभाष परंपरा ही है। अपने संबोधन में विजय दत्त श्रीधर ने उनके इस गुण की चर्चा करके इसे प्रमाणित भी किया। इस पूरे आयोजन में प्रभाष जी की सहधर्मिणी श्रीमती ऊषा जोशी की मौन उपस्थिति भी यह बताने के लिए काफी है कि जिस तरह उन्होंने प्रभाष जी का ताजिंदगी साथ दिया, उसी तरह प्रभाष परंपरा न्यास का साथ और सानिध्य देने को वह तत्पर हैं। इस यात्रा की एक बड़ी उपलब्धि 'विनोबा दर्शन' पुस्तक है, जिसमें विनोबा दर्शन की झलक प्रभाष जी की उन 39 रिपोर्ट से मिलती है जो उन्होंने 1960 में विनोबा के इंदौर प्रवास के वक्त नई दुनिया के लिए लिखीं थीं। प्रभाष जी का पहला लेखन 63 वर्ष बाद पुस्तकाकार रूप में आया है तो इसके पीछे भी अपने पूर्वज के प्रति आस्था और कर्म के प्रति निष्ठा ही है।

क्यों जरूरी है बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देना

लेखक
आर.के. सिन्हा

> बेशक, यह एक युगांतकारी फैसला है। हरेक बच्चे के पास यह विकल्प होना ही चाहिए कि वह अपनी मातृभाषा में स्कूली शिक्षा ग्रहण कर सके। हां, उसे विषय के रूप में कोई एक भाषा या एकाधिक भाषाएं पढ़ाई जा सकती हैं। भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर ने भी अपनी स्कूली शिक्षा क्रमशः अपनी मातृभाषा हिन्दी और मराठी में ही ली थी। ये दोनों आगे चलकर अंग्रेजी में भी महारत हासिल करने में सफल रहे। इन दोनों से बड़ा ज्ञानी कौन होगा। यानी आप प्राइमरी तक अपनी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने के बाद बेहतर ढंग से आगे बढ़ सकते हैं। टाटा समूह के चेयरमेन नटराजन चंद्रशेखरन ने भी अपनी स्कूली शिक्षा अपनी मातृभाषा तमिल में ही ली थी।

अभी कुछ दिन पहले ही केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसआई) ने एक बेहद जरूरी फैसला लिया। इसके तहत अब सीबीएसई स्कूलों को प्री-प्राइमरी से 12वीं कक्षा तक क्षेत्रीय व मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने का विकल्प देगी। अब तक, राज्य बोर्ड स्कूलों के विपरीत, सीबीएसई स्कूलों में केवल अंग्रेजी और हिंदी माध्यम ही शिक्षा प्राप्त करने का विकल्प था। सीबीएसई ने अपने सभी संबंधित स्कूलों से कहा है कि जहां तक संभव हो सके यथाशीघ्र तो पांचवीं कक्षा तक क्षेत्रीय भाषा में या फिर बच्चे की मातृभाषा में पढ़ाई के विकल्प उपलब्ध कराएं । बेशक, यह एक युगांतकारी फैसला है। हरेक बच्चे के पास यह विकल्प होना ही चाहिए कि वह अपनी मातृभाषा में स्कूली शिक्षा ग्रहण कर सके। हां, उसे विषय के रूप में कोई एक भाषा या एकाधिक भाषाएं पढ़ाई जा सकती हैं। भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर ने भी अपनी स्कूली शिक्षा क्रमशः अपनी मातृभाषा हिन्दी और मराठी में ही ली थी। ये दोनों आगे चलकर अंग्रेजी में भी महारत हासिल करने में सफल रहे। इन दोनों से बड़ा ज्ञानी कौन होगा। यानी आप प्राइमरी तक अपनी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने के बाद बेहतर ढंग से आगे बढ़ सकते हैं। टाटा समूह के चेयरमेन नटराजन चंद्रशेखरन ने भी अपनी स्कूली शिक्षा अपनी मातृभाषा तमिल में ही ली थी। उन्होंने स्कूल के बाद इंजीनियरिंग की डिग्री रीजनल इंजीनयरिंग कालेज (आरईसी), त्रिचि से हासिल की। यह जानकारी अपने आप में महत्वपूर्ण इस दृष्टि से है कि तमिल भाषा से स्कूली शिक्षा लेने वाले विद्यार्थी ने आगे चलकर अंग्रेजी में भी महारत हासिल किया और करियर के शिखर को छुआ। बेशक, भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करने की अंधी दौड़ के चलते अधिकतर बच्चे असली शिक्षा को पाने के आनंद से वंचित रह जाते हैं। असली शिक्षा का आनंद तो आप तब ही पा सकते हैं, जब आपने कम से कम पांचवीं तक की शिक्षा अपनी मातृभाषा में ही हासिल की हो। विभिन्न अध्ययनों से प्रमाणित हो चुका है कि जो बच्चे मातृभाषा में स्कूली शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे अधिक सीखते हैं। अंग्रेजी का विरोध नहीं है या अंग्रेजी शिक्षा या अध्ययन को लेकर कोई आपत्ति भी नहीं है। पर भारत को अपनी भाषाएं, चाहे हिन्दी, तमिल, बांग्ला या कोई अन्य, में प्राइमरी स्कूली शिक्षा देने के संबंध में तो बहुत पहले ही फैसला ले लेना चाहिए था। क्योंकि उसके बिना बच्चों को सही शिक्षा तो नहीं दी जा सकती। हां, शिक्षा के नाम पर प्रमाणपत्र जरूर बांटे जा सकते हैं। याद रखें कि शिक्षा का अर्थ है ज्ञान। बच्चे को ज्ञान कहां मिला? हम तो उन्हें नौकरी पाने के लिए तैयार कर रहे हैं। अभी हमारे यहां पर दुर्भाग्यवश स्कूली या कालेज शिक्षा का अर्थ नौकरी पाने से अधिक कुछ भी नहीं है। आजादी के बाद हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के उत्थान का जो सपना देखा गया था वह सपना दस्तावेजों और सरकारी कार्यक्रमों में ही दबकर रह गया था। हम सब जानते हैं कि सारे देश में अंग्रेजी के माध्यम से स्कूली शिक्षा लेने- देने की महामारी ने अखिल भारतीय स्वरूप ले लिया है। जम्मू-कश्मीर तथा नगालैंड ने अपने सभी स्कूलों में शिक्षा का एकमात्र माध्यम अंग्रेजी ही कर दिया है। महाराष्ट्र, दिल्ली, तमिलनाडू समेत कुछ और अन्य राज्यों में छात्रों को विकल्प दिए जा रहे हैं कि वे चाहें तो अपनी पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी रख सकते हैं। यानी बच्चों को उनकी मातृभाषा से दूर करने की भरपूर कोशिश हुई।

मुझे मेरे एक मित्र, जो राजधानी के मशहूर स्कूल के प्रधानाचार्य रहे हैं, बता रहे थे कि जब वे हरियाणा के करनाल जिले के एक ग्रामीण इलाके में पढ़ा रहे थे तो उन्हें एक नया अनुभव हुआ। वहां पर माता-पिता के साथ बच्चे खुशी-खुशी स्कूल में दाखिला लेने आते। वे नई किताबें और कॉपियां लेकर स्कूल आने लगते। लेकिन, स्कूल में कुछ दिन बिताने के बाद उनका स्कूल से मोहभंग होने लगता। वे कहने लगते कि उन्हें तो पढ़ना आता ही नहीं। वे धीरे-धीरे चुप रहने लगते कक्षा में। इसकी वजह यह थी कि उन्हें पढ़ाया जाता था अंग्रेजी में। उन्हें उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता तो शायद उनका स्कूल और पढ़ाई से मोहभंग न होता। इस स्थिति के कारण अनेक बच्चे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते। विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा देना मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक रूप से वांछनीय है , क्योंकि, विद्यालय आने पर बच्चे यदि अपनी भाषा में पढ़ते हैं, तो वे विद्यालय में आत्मीयता का अनुभव करने लगते हैं और यदि उन्हें सब कुछ उन्हीं की भाषा में पढ़ाया जाता है, तो उनके लिए सारी चीजों को समझना बेहद आसान हो जाता है।

समूचे संसार के भाषा-वैज्ञानिकों, अध्यापकों और शिक्षा से जुड़े अन्य जानकारों की राय है कि बच्चा सबसे आराम से अपनी भाषा में पढ़ाए जाने पर ही शिक्षा ग्रहण करता है। जैसे ही उसे किसी अन्य भाषा में पढ़ाया जाने लगता है, तब ही गड़बड़ चालू हो जाती है। हमारे देश में तो यही होता चला आ रहा है। कई अध्ययनों से साबित हो चुका है कि जो बच्चे अपनी मातृभाषा में प्राइमरी से पढ़ना चालू करते हैं उनके लिए शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़ने की संभावनाएं अधिक प्रबल रहती हैं। यानी बच्चे जिस भाषा को घर में अपने अभिभावकों,भाई-बहनों, मित्रों के साथ बोलते हैं, उसमें पढ़ने में उन्हें अधिक सुविधा रहती है। अफसोस कि हमारे देश के एक बड़े वर्ग ने मान लिया है कि अंग्रेजी जाने-समझे बिना गति नहीं है। इसके चलते हर स्तर पर इसे बढ़ावा देने की मानसिकता नजर आती है। एक तरह से यह सोच घर कर गई है कि अंग्रेजी जाने बिना दुनिया अधूरी-अधकचरी है। बेशक, इसी मानसिकता के चलते हमारे समाज का एक बड़ा हिस्सा अपनी आय का एक बड़ा भाग अपने बच्चों को कथित अंग्रेजी स्कूलों में भेजने पर खर्च करने लगा है।

एक अनुमान के मुताबिक, वर्तमान में भारत के 25 फीसद स्कूली बच्चे उन स्कूलों में पढ़ाई शुरू करने लगे हैं, जहां पर मातृभाषा की बजाय शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। इन बच्चों को शिक्षा का आनंद आ ही नहीं सकता। और इनमें से अनेक अंग्रेजी की अनिवार्यता का चलते स्कूलों को छोड़ देते हैं। खैर, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसआई) के ताजा फैसले से एक उम्मीद अवश्य जागी है कि चलो हमने भी भारत की अपनी भाषाओं को सम्मान देना भले ही देर से चालू तो किया।

योगी सरकार, शिक्षा में बड़ा सुधार

लेखक
डॉ.दिलीप अग्निहोत्री

> मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालयों को प्रारम्भिक तौर पर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लिया जाएगा। सभी जनपदों में एक विद्यालय मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय के रूप में विकसित किया जाएगा। प्रोजेक्ट अलंकार के तहत माध्यमिक विद्यालयों के जीर्णोद्धार कार्य को तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा। शासकीय के साथ-साथ वित्त पोषित अशासकीय विद्यालयों में सम्बन्धित प्रबन्ध तंत्र के सहयोग से जीर्णोद्धार होगा। उत्तर प्रदेश के विकास पर नीति आयोग की रिपोर्ट चर्चा में है। इसके आधार पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सुशासन का आकलन किया जा सकता है। नीति आयोग की रिपोर्ट में कहा गया कि यूपी विकसित प्रदेश बनने की दिशा में अग्रसर है। छह वर्ष में साढ़े पांच करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आ चुके हैं। लोग समर्थ और सक्षम बन रहे हैं। नीति आयोग के निर्धारित मानकों में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण था। नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा के सभी स्तरों पर व्यापक सुधार हुआ है।

योगी सरकार ने छह वर्ष में उत्तर प्रदेश में विकास के नये आयाम स्थापित किए हैं। इसमें शिक्षा भी शामिल है। माध्यमिक और बेसिक शिक्षा पर इतना ध्यान पहले कभी नहीं दिया गया।ऑपरेशन कायाकल्प योगी आदित्यनाथ की अभिनव योजना रही है। परिषदीय विद्यालयों में इंफ्रॉस्ट्रक्चर डेवलपमेंट के लिए ऑपरेशन कायाकल्प के पहले चरण में किए गए प्रयासों में आशातीत सफलता मिली है। इस अवधि में परिषदीय विद्यालयों के इंफ्रॉस्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए 11 हजार करोड़ रुपये खर्च किये गए। बेसिक शिक्षा परिषद तथा माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में एक लाख 64 हजार से अधिक शिक्षकों की भर्ती की गई है। बेसिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में करीब साठ नये विद्यार्थियों का नामांकन हुआ। सितंबर तक प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के 2.36 लाख शिक्षकों को टैबलेट उपलब्ध कराए जाएंगे। शिक्षकों को ट्रेनिंग दी जाएगी। टैबलेट में शासकीय कार्यक्रमों की योजनाओं के बारे में जागरुकता सामग्री प्री-लोडेड होगी। अब ऑपरेशन कायाकल्प के दूसरे चरण की शुरूआत की तैयारी शुरू हो रही है। इंफ्रॉस्ट्रक्चर के साथ शैक्षिक गुणवत्ता, पठन-पाठन का माहौल, तकनीकी दक्षता, डिजिटल लर्निंग और वोकेशनल शिक्षा की ओर बढ़ना होगा। विद्यालयों में ह्यएट ग्रेड लर्निंगह्व की व्यवस्था होगी। मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालयों को प्रारम्भिक तौर पर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लिया जाएगा। सभी जनपदों में एक विद्यालय मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय के रूप में विकसित किया जाएगा। प्रोजेक्ट अलंकार के तहत माध्यमिक विद्यालयों के जीर्णोद्धार कार्य को तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा। शासकीय के साथ-साथ वित्त पोषित अशासकीय विद्यालयों में सम्बन्धित प्रबन्ध तंत्र के सहयोग से जीर्णोद्धार होगा। उत्तर प्रदेश के विकास पर नीति आयोग की रिपोर्ट चर्चा में है। इसके आधार पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सुशासन का आकलन किया जा सकता है। नीति आयोग की रिपोर्ट में कहा गया कि यूपी विकसित प्रदेश बनने की दिशा में अग्रसर है। छह वर्ष में साढ़े पांच करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आ चुके हैं। लोग समर्थ और सक्षम बन रहे हैं। नीति आयोग के निर्धारित मानकों में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण था। नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा के सभी स्तरों पर व्यापक सुधार हुआ है। राज्य में 746 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों के क्रमिक उन्नयन तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों को प्री-प्राइमरी के रूप में विकसित करने का कार्य किया जा रहा है। इस क्रम में मुख्यमंत्री ने लोक भवन में बेसिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को ड्रेस, स्वेटर, स्कूल बैग, जूता-मोजा एवं स्टेशनरी क्रय के लिए धनराशि का डीबीटी के माध्यम से अन्तरण प्रक्रिया का शुभारम्भ किया।

इसके अलावा योगी सरकार ने नकल विहीन परीक्षा सुनिश्चित की गई। इससे देश में यूपी की शिक्षा का महत्व और सम्मान बढ़ा है। शिक्षा में किया गया निवेश कभी व्यर्थ नहीं जाता। शिक्षा देश और समाज के भविष्य को संवारने का माध्यम है। छह वर्ष पहले प्रदेश में मात्र बारह राजकीय मेडिकल कॉलेज थे। विगत छह वर्षों के प्रयास के बाद आज पैंतालीस जनपदों में सरकारी मेडिकल कॉलेज संचालित हैं। आज प्रदेश में 22 राज्य विश्वविद्यालय व तीन केन्द्रीय विश्वविद्यालय संचालित हैं। छत्तीस निजी विश्वविद्यालय, दो एम्स हैं। दो आईआईटी व आईआईएम संचालित हैं। दो हजार से अधिक पॉलिटेक्निक व वोकेशनल इंस्टीट्यूट भी संचालित हैं। कुछ दिन बाद हर जिले में विश्वविद्यालय नजर आएंगे।

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी पान उत्पादक व्यापार प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों का प्रांतीय सम्मेलन २८ जुलाई को भोपाल में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ जी की अध्यक्षता में आयोजित होगा सम्मेलन

राम सिंह यादव ◈ टीकमगढ़

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी पान किसान एवं उत्पादक प्रकोष्ठ के पदाधिकारी का प्रांतीय सम्मेलन आगामी 28 जुलाई को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय भोपाल में आयोजित होगा प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव जगदीश प्रसाद चौरसिया के अनुसार कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय कमलनाथ जी करेंगे प्रांतीय सम्मेलन का नेतृत्व मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी पान उत्पादक एवं व्यवसाय प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष माननीय बसंत जी चौरसिया करेंगे। जिला मीडिया प्रभारी देवीदयाल (दिनेश) चौरसिया ने बताया कि भोपाल में आयोजित होने वाले पान उत्पादक एवं व्यवसाय प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों के प्रांतीय कार्यक्रम में टीकमगढ़ जिले से सैकड़ों की संख्या में लोग शामिल होंगे जिसमें बहुत से भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करेंगे,इसी के साथ छतरपुर , पन्ना, सागर,सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों से हजारों की संख्या में पान उत्पादक पान व्यवसायी एवं पान दुकानदार शामिल होंगे प्रदेश महासचिव जगदीश प्रसाद चौरसिया ने कहा कि लंबे समय से प्रदेश के पान किसानों की आवाज को बुलंद करने वाले हम सभी के नेता माननीय बसंत जी चौरसिया के आव्हान पर प्रदेश भर से कार्यक्रम में शामिल होने हेतु भोपाल रवाना होंगे। कांग्रेस कमेटी पान उत्पादक एवं व्यवसाय प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव राघवेन्द्र चौरसिया, टीकमगढ़ ग्रामीण जिला अध्यक्ष भागीरथ चौरसिया, ग्रामीण जिला अध्यक्ष कैलाश चौरसिया,पलेरा ब्लॉक अध्यक्ष, राजेश चौरसिया, बल्देवगढ़ ब्लाक अध्यक्ष प्रदीप चौरसिया आनू ,,जतारा ब्लॉक अध्यक्ष ने 28 जुलाई शुक्रवार को भोपाल में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की पान उत्पादकों,पान व्यवसाईयो,पान दुकानदारों से अपील की है।

Apo की मिली भगत से नही हो रही सरपंच,सचिव व उपयंत्री पर कार्यवाही,वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश की की जा रही अवेह्लना

पिछले 12 वर्षो से अधर मे लटक रहा मुख्यमंत्री कपिल धारा कूप,अधिकारी नही दे रहे ध्यान

राम सिंह यादव ◈ टीकमगढ़ (चंदेरा)

प्रदेश के मुखिया शिवराज सिंह चौहान लगातार किसानों के लिए तरह-तरह की तमाम जन हितेषी योजनाएं क्रियान्वित कर रहे हैं किंतु जिला और जनपद पंचायतों में बैठे जिम्मेदारों के कान पर जूं तक नहीं रेंगती। क्षेत्रीय नेताओं के संरक्षण के चलते जिम्मेदार अधिकारी बेलगाम हो गए हैं। भाजपा के शासनकाल में टीकमगढ़ जिले की जतारा विधानसभा क्षेत्र में भ्रष्टाचार हावी है क्योंकि स्थानीय भाजपा के नेताओं के संरक्षण होने से अधिकारी खुलेआम धांधली और लूट मचा रहे हैं क्षेत्र की जनता अधिकारियों के सैकड़ों चक्कर लगाती हैं फिर भी अधिकारी किसी प्रकार का ध्यान नहीं दे रहे हैं। लोगों की शिकायतें वर्षों से लटकी हुई है जिसका निराकरण आज तक भ्रष्ट अधिकारियों के चलते नहीं हो पा रहा है प्रदेश के मुखिया शिवराज सिंह चौहान की महत्वकांक्षी योजना कपिलधारा कूप निर्माण को जनपद पलेरा के अधिकारी व जिले के आला अधिकारी पलीता लगा रहे हैं। पूरा मामला विधानसभा क्षेत्र जतारा की जनपद पंचायत पलेरा की सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार में लिप्त मानी जाने वाली ग्राम पंचायत हरकनपुरा का है, जहां वर्ष 2011-12 में हितग्राही रमोले अहिरवार निवासी बिजरावन का कपिलधारा कूप निर्माण स्वीकृत हुआ था जिसकी स्वीकृत राशि 2.58 लाख रुपए थी। हितग्राही ने जानकारी देते हुए बताया कि उपयंत्री बीएम बुनकर द्वारा हितग्राही से पैसों की मांग की गई थी जो हितग्राही द्वारा ना देने पर काम को रोक दिया गया था जिसके बाद हितग्राही रमोले अहिरवार द्वारा कूप निर्माण की जनपद पंचायत पलेरा से लेकर जिला टीकमगढ़ तक शिकायत की गई जिसके बाद कूप निर्माण कार्य चालू किया गया था कूप निर्माण का कार्य हितग्राही द्वारा 40 फुट गहरा खोदा गया था लेकिन उपयंत्री के द्वारा मूल्यांकन ना करने के कारण कूप ध्वस्त हो गया था जिसके बाद वर्ष 2018 में कूप का कार्य पुनः शुरू किया गया जिसमें कुआँ की 20 फुट बंधाई की गई थी जिसमें उपयंत्री प्रियंका त्रिपाठी ने ?143000 रुपए की राशि का मूल्यांकन भी कर दिया है इसके बाद कूप निर्माण कार्य बंद कर दिया गया जब से आप तक कूप निर्माण अधर में ही लटका हुआ है आपको बता दें हितग्राही के द्वारा शिकायत करने पर जनपद पंचायत से जांच कमेटी गठित की गई थी जिसमें कोई कार्यवाही नहीं हुई तो हितग्राही ने जिले में मुख्य कार्यपालन अधिकारी व कलेक्टर को भी आवेदन दिया था जिसमें मुख्य कार्यपालन अधिकारी के द्वारा सरपंच सचिव एवं उपयंत्री पर मनरेगा के कार्य कूप निर्माण में अनियमितताओं को लेकर धारा 92 के तहत वसूली ब प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए जनपद पंचायत पलेरा को आदेशित किया था जिसमें अस्त्रङ्क साधना सिंह की मिलीभगत से उपयंत्री व सरपंच सचिव पर किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं की गई इसके बाद दिनांक 12 अक्टूबर 2022 को अंतिम स्मरण पत्र मुख्य कार्यपालन अधिकारी टीकमगढ़ द्वारा जारी किया गया जिसमें आज 9 माह बाद भी सरपंच सचिव और उपयंत्री पर अस्त्रङ्क साधना सिंह की मिलीभगत होने के कारण कार्यवाही नहीं हो पा रही है अब यहाँ अधिकरीयो पर सवालिया निशान खड़े होते है की इतना समय बीत जाने के बाद भी कार्यवाही नही हुई है हितग्राही ने अधिकारियों के चक्कर लगा कर परेशान होकर पुलिस में भी शिकायत दर्ज करा चुका हैं फिर मजबूर होकर जतारा न्यायालय की शरण ली गई है यदि इसी प्रकार हितग्राही अधिकारियों से परेशान होते रहे तो सभी को न्यायालय में ही शिकायतें दर्ज करानी पड़ेगी। यदि सरपंच सचिव और उपयंत्री पर कार्यवाही नहीं की गई तो हितग्राही अपने द्वारा निर्मित कुएं में गिर कर जान देने को बाध्य होगा और उसके जिम्मेदार जिला एवं जनपद पंचायत के समस्त अधिकारी जिम्मेदार सरपंच सचिव उपयंत्री होंगी व Apo साधना सिंह भी जिम्मेदार होंगी।

> अभी मुख्य कार्यपालन अधिकारी ऑफिस में नहीं बैठ रहे हैं जैसे ही कल कार्यालय में आते हैं मैं फाइल पर साइन करवा लूंगी।
> **साधना सिंह-APO** जनपद पंचायत पलेरा।
>
> आपके द्वारा जानकारी प्राप्त हुई है मुझे अभी तक संज्ञान में नहीं था मैं कूप निर्माण को देखकर ही बता पाऊंगा कि उसकी स्थिति क्या है अभी तक रुका क्यों गया है।
> - **सिद्धगोपाल वर्मा** -मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत जतारा एवं पलेरा।

पुरानी रंजिश के चलते मारपीट कर युवक का सिर फोड़ा

धार । धार जिले के कानवन थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम छोखुर्द के युवक का पुरानी रंजिश को लेकर आरोपियों ने लठ्ठ से सिर पर वार कर चोट पहुंचाई जानकारी के अनुसार ग्राम छोखुर्द में रहने वाले युवक विजय खराड़ी का गांव के ही आरोपियों से विवाद चल रहा था इसी रंजिश को लेकर आरोपियों रवि देवदा कन्हैयालाल देवदा .प्रदीप मुनिया आरोपियों ने एकमत होकर फरियादी का रास्ता रोककर मारपीट की वह सर पर गंभीर चोट पहुंचाई जिससे फरियादी युवक को अस्पताल में भर्ती होना पड़ा यहां पर इलाज के दौरान उसके सर पर 2 टांके लगाए हैं पुलिस ने इस मामले को लेकर विभिन्न धाराओं मैं प्रकरण दर्ज किया है

आजादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में धार जिले के स्वतंत्रता सेनानियों एवं उनके परिवारजनों को किया सम्मानित

फतवा समाचार ◈ धार

धार पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह एवं भगवत सिंह विरदे, सेनानी 34वीं वाहिनी विसबल धार के मार्गदर्शन में 34 वाहिनी विसबल धार एवं जिला पुलिस बल धार के द्वारा संयुक्त रूप से स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के असवर पर "आजादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में धार जिले के स्वतंत्रता सेनानियों एवं उनके परिवारजनों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किये गये । इस दौरान स्वतंत्रता सेनानी श्री वल्लभ विजयवर्गीय रासमण्डल धार, प्रहलाद दास सोलंकी एवं स्व. श्री भंवरलाल राजपुरोहित एल.आई.जी. कालोनी धार के निवास पर जाकर अधिकारियों ने स्वतंत्रता सेनानियों /उनके परिवार जनों को शॉल श्रीफल, पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया स्वतंत्रता संग्राम की गौरव गाथा को याद किया गया। इस दौरान पुरूषोत्तम विश्नोई रक्षित निरीक्षक धार, रविन्द्र कुमार बघेल क्वार्टर मास्टर 34वीं वाहिनी, रविन्द्र कुशवाह सूबेदार पुलिस लाईन धार, माधुसिंह चौहान उपनिरीक्षक 34वीं वाहिनी विसबल धार एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

अवैध तरीके निजी भूमि कर रहा निर्माण

बाल किशन विश्वकर्मा ◈ छतरपुर

राजनगर एसडीएम के आदेश की उड़ रही धज्जियां अवैध जमीन तरीके से कब्जा किया जा रहा किया! निर्माण खजुराहो नगर परिषद की बिना परमिशन के किया जा रहा है बताया गया है कि राजनीतिक रसूख के चलते अवैध निर्माण को जबरजस्ती दिया जा रहा! जिससे जमीन वाले परेशान एवं हैरान परेशान स्थानीय हरि विश्वकर्मा बहुत परेशान है अपनी जमीन को लेकर इन्होंने अवैध निर्माण को लेकर कई जगह शिकायतें भी की है! मगर आज दिनांक तक इन शिकायतों पर कोई निराकरण नहीं हो पाया है! ऐसे में ऐसा प्रतीत होता है! कि अवैध धारी इस जमीन पर पूर्ण रूप से कब्जा कर लेंगे! अपनी जमीन बचाने के लिए प्रशासन से गुहार लगाई है

सुराणा गांव की महिलाओं ने जनसुनवाई में की गांव में शराबबंदी साथ ही अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई की मांग

फतवा समाचार ◈ बड़वानी1

बड़वानी जिले के अंजड़ थाना क्षेत्र के ग्राम सुराणा में अवैध शराब के कारोबार पर अंकुश लगाने की मांग लेकर मंगलवार को गांव की महिलाएं कलेक्ट्रेट पहुंची। जनसुनवाई में महिलाओं द्वारा कलेक्टर पुलिस अधीक्षक व आबकारी अधिकारी को अलग-अलग ज्ञापन सौंपा गया। जिसमें महिलाओं ने बताया की हमारे गांव सुराणा सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भारी मात्रा में अवैध शराब बेची जा रही है जिसके कारण युवा वर्ग इसकी चपेट में आकर अपना भविष्य खराब कर रहा है ' प्रशासन ग्रामीण क्षेत्रों में बिक रही शराब के खिलाफ कार्रवाई करे व हमारे गांव में पूरी तरह से शराब बंदी की जाए। ताकि घर की महिलाओं व बच्चों को परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। पहले भी कई बार शराबबंदी को लेकर पुलिस थाना अंजड़ को ज्ञापन सौंप चुके है, मगर आज तक कोई कार्रवाई नही हुई आज गांव की सभी महिलाएं बड़वानी जिला मुख्यालय पहुंची है। जहां जनसुनवाई में कलेक्ट्रेट कार्यालय, पुलिस अधीक्षक कार्यालय सहित जिला आबकारी अधिकारी के कार्यालय पहुंच हमने तीनों को ज्ञापन सौंपा। महिलाओं ने बताया कि शराब के कारण कई घर टूट रहे है बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे है कंट्रोल का राशन घर नहीं लाते है आदमी उसे बाहर ही बेचकर शराब पी जाते हैं।

उगली पुलिस की कार्रवाई:डीजल चोर गिरोह के 5 सदस्यों को किया गिरफ्तार, 12 केन में कुल 420 लीटर डीजल जब्त

फतवा समाचार ◈ सिवनी

सिवनी जिले के उगली के समीप पुलिस को जानकारी मिली थी कि कुछ लोग स्कॉर्पियो वाहन में डीजल का अवैध परिवहन कर रहे हैं। जहां चौपाया वाहन स्कॉर्पियो सफेद रंग की वाहन क्रमांक टढ28 इऊ 2242 को पुलिस ने रोका, जिसके अंदर डीजल भरा हुआ था और डीजल का अवैध परिवहन किया जा रहा था। बताया जा रहा है कि वाहन से बरामद 35 लीटर वाली 12 केन में कुल 420 लीटर डीजल को जब्त किया गया है। कुछ लोगों को हिरासत में लिया गया है। जिनमें अमन पिता रज्जन यादव उम्र 20 वार्ड नंबर 1 ढीमर मोहल्ला नदी के पास नैनपुर, हर्ष प्रभु दयाल गुप्ता उम्र 19 वार्ड नंबर 15 खैरमाई मंदिर के पास नैनपुर, हिमांशु पिता राजकुमार विश्वकर्मा उम्र 19 वार्ड नंबर 15 खैरमाई मोहल्ला नैनपुर, सौरभ पिता ओमप्रकाश सोनी उम्र 23 वार्ड नंबर 11 पुरानी बस्ती हिंदी मोहल्ला नैनपुर और रवि पिता झामसिंह नाग उम्र 35 निवासी अंडिया थाना नैनपुर के शामिल है। इस मामले में सदानंद गोदेवार थाना प्रभारी उगली का कहना है कि हमें वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश थे। जिसके आधार पर हमारे स्टाफ ने बैरिकेड्स लगाकर उगली रेस्ट हाउस के सामने वाहनों के ऊपर नजर बनाए हुए थे। एक स्कॉर्पियो चालक हमें चकमा देकर केवलारी रोड पर तेजी से भाग रहा था। जिसे हमने वन देवी बंजारी के ऊपर वाहन को पकड़ा। आरोपियों के विरुद्ध मामला पंजीबद्ध कर लिया गया है।

आसमानी बिजली की चपेट में आने से महिला की मौत

फतवा समाचार ◈ सिवनी

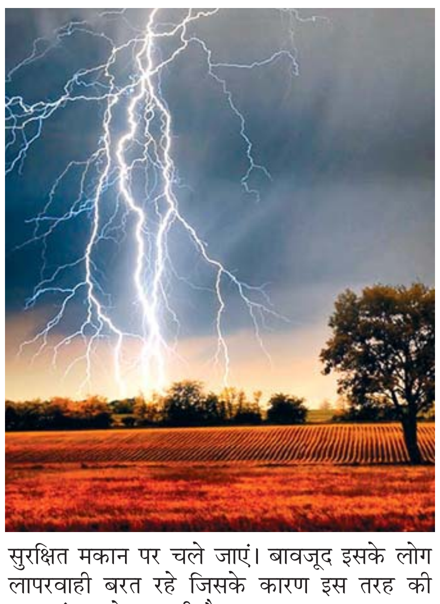

सिवनी जिले की आदिवासी विकास खंड के अंतर्गत आने वाले शेरू खापा ग्राम के एक खेत में शाम के समय महिला कृषि कार्य कर रही थी। वहीं अचानक मौसम खराब हो गया और हल्की बारिश के बाद आसमान से गड़गड़ाहट के बाद बिजली गिरी। जिसकी चपेट में खेत में काम कर रही महिला आ गई। जिसके कारण वह घायल हो गई। मौके पर मौजूद लोगों ने घटना की जानकारी घंसौर पुलिस को दी। जहां डायल 100 की मदद से घायल महिला को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। और उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक महिला का नाम मुन्नी बाई पति बखत लाल भलावी उम्र 45 वर्ष निवासी शेरू खापा है। फिलहाल पुलिस पूरे घटनाक्रम की जांच कर रही है। और अधिकारियों की टीम भी पूरे घटनाक्रम का पता लगाने का प्रयास कर रही है। जिला प्रशासन की ओर से लगातार लोगों से अपील की जा रही है कि बारिश के मौसम को देखते हुए सुरक्षित स्थान पर रहे। यदि बरसात की स्थिति बनती है तो किसी भी सुरक्षित मकान पर चले जाएं। बावजूद इसके लोग लापरवाही बरत रहे जिसके कारण इस तरह की घटनाएं सामने आ रही है।

पूर्व मंत्री जनता से कहेंगे मन की बातः पश्चिम विधानसभा में रथ यात्रा निकालेंगे हरेंद्रजीत

फतवा समाचार◈ जबलपुर

हाल ही में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के साथ बैठकर चर्चा में आए मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री और पश्चिम विधानसभा से पूर्व विधायक हरेंद्रजीत सिंह ने एक और ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि जल्द ही वह पश्चिम विधानसभा क्षेत्र की जनता से मन की बात करने के लिए रथ यात्रा निकालने वाले है। उनकी यह यात्रा पूरी तरह से व्यक्तिगत होगी जिसमें कि उनकी पार्टी का कोई भी नेता शामिल नही होगा। संभवतः आगामी 27 जुलाई से अपनी रथ यात्रा की पूर्व मंत्री हरेंद्रजीत सिंह बब्बू नर्मदा आरती के साथ शुरूआत करेंगे।

मंगलवार को जबलपुर में एक पत्रकारवार्ता को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री हरेंद्रजीत सिंह बब्बू ने कहा कि पश्चिम विधानसभा की वो जनता जिन्होंने अपना आशीर्वाद देते हुए विधायक और मंत्री बनाया था, अब उसी जनता की मन की बात जानने रथ यात्रा निकाली जा रही है। रथ यात्रा की तारीख तय नहीं है लेकिन एक दो दिन में इसकी शरुआत हो सकती है। पूर्व मंत्री की यह यात्रा करीब 36 दिन तक चलेगी। पूर्व मंत्री ने कहा कि यह यात्रा भाजपा पार्टी की नहीं बल्कि उनकी व्यक्तिगत है, इसलिए वह इसमें किसी भी नेता को शामिल नही करेंगे। इस रथ यात्रा के जरिए हरेंद्रजीत सिंह जनता के बीच जाकर अपनी मन की बात को रखना चाह रहें है।

पूर्व मंत्री की रथ यात्रा नर्मदा नदी के ग्वारीघाट तट से पूजा अर्चना के बाद शुरू होगी। पूर्व विधायक हर वार्ड में दो दिन बिताएंगे, इस दौरान प्रयास होगा कि हर घर के मतदाताओं से संवाद किया जा सके। उन्होंने इसके लिए पर्चा बनाया है जिसमें विधानसभा क्षेत्र की बात कहीं है। हरेंद्रजीत सिंह ने कहा कि विधायक रहते हुए क्षेत्र में विकास कार्य के बारे में जनता को बताएंगे। उन्होंने कहा कि पश्चिम विधानसभा में विगत दस साल में कांग्रेस के विधायक ने जनता को छला है। पूर्व मंत्री ने कहा कि दस साल विधायक रहते हुए जनहित के लिए वह कई बार जेल भी गए। दस साल में विधायक रहते जनहित के लिए सडकों पर आंदोलन किया, चकाजाम किया, कलेक्ट्रेट का घेराव किया। इसके अलावा जनहित के लिए कई बार एसपी आफिस और थानों का घेराव भी किया। उन्होंने कहा कि मैं वर्तमान के कांग्रेस विधायक पर कंबल, साड़ी और रुपए नहीं बांट सकता हूं।

भाजपा से पूर्व मंत्री रहें हरेंद्रजीत सिंह ने कहा कि पार्टी के किसी नेता को वो इस यात्रा में नहीं शामिल कर रहे हैं। यात्रा की जानकारी उन्होंने पार्टी हाईकमान को दी है। उनकी यात्रा में ना ही पार्टी के नेता शामिल होंगे और ना ही सिख समाज के लोग। उन्होंने कहा कि भीड़ अधिक नहीं रखूंगा सिर्फ कुछ सहयोगी ही रथ यात्रा में साथ में होंगे।

पूर्व मंत्री हरेंद्रजीत सिंह की रथ यात्रा की जानकारी स्थानीय संगठन को नही दी गई है। भाजपा नगर अध्यक्ष प्रभात साहू का यात्रा को लेकर कहना है कि मुझे अभी इसकी जानकारी नही है कि हरेंद्रजीत सिंह ने कोई पत्रकारवार्ता की है। वह यात्रा निकाल रहें है, ठीक है, पर उन्हें संगठन को जानकारी जरूर देना चाहिए था।

21 वर्ष से 23 वर्ष तक की महिलाओं के लिए 25 जुलाई से प्रारंभ हुई मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना 2023 के नवीन आवेदनभरने की प्रक्रिया

निगमायुक्त सतेंद्र सिंह धाकरे ने कार्य व्यवस्थाओं के लिए अधिकारियों कर्मचारियों को सौंपी जिम्मेदारी

फतवा समाचार◈ कटनी

मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना 2023 के संबंध राज्य शासन द्वारा किए गए संशोधनों के अनुक्रम में दिनांक 1 जनवरी 2023 को 21 वर्ष या उससे अधिक 23 वर्ष एवं 23 वर्ष से 60 वर्ष तक की जिन महिलाओं एव समग्र परिवार में आश्रित के नाम पर भी ट्रैक्टर रजिस्टर्ड है। उन्हें भी मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना का लाभ दिया जाएगा। इसके अलावा समग्र पोर्टल पर आधार ईकेवाईसी पूर्ण कराते हुए नवीन हितग्राहियों के ऑनलाइन आवेदनों का पंजीयन दिनांक 25 जुलाई 2023 से प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। जो 20 अगस्त 2023 तक जारी रहेगी। नगर पालिक निगम सीमा अंतर्गत सभी 45 वार्डों के आवेदन पंजीयन की कार्रवाई एवं कार्य व्यवस्था हेतु निगमायुक्त सत्येंद्र सिंह धाकरे के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में उपायुक्त पीके अहिरवार को नोडल अधिकारी एवं सहायक राजस्व अधिकारी जागेश्वर पाठक योजना प्रभारी रवि शंकर पांडे को सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

चारों जोन कार्यालय में शुरू हुई नवीन आवेदन भरने की प्रक्रिया

नवीन आवेदन भरने के लिए 45 वार्डों के आवेदन पत्रों की कार्रवाई चार जोन कार्यालयों में 1 ऑडिटोरियम बस स्टैंड 2 दुर्गा चौक खिरहनी 3 कार्यालय नगर पालिक निगम एवं माधव नगर उप कार्यालय में की जा रही है। इस बार 21से 23 साल की पात्र लाडली बहना जिनके नाम पर ट्रेक्टर भी है। उन्हें भी शासन की योजना का लाभ दिया जायेगा। इसके लिए 45 वार्डों में नियुक्त वार्ड प्रभारी वार्ड दरोगा एआरआई सहयोगी कर्मचारी वार्डों का भ्रमण कर योजना के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए योजना से वंचित महिलाओं को लाभान्वित कराने का कार्य भी करेगें।

आबकारी विभाग की कार्यवाई में अवैध शराब के 03 प्रकरण दर्ज

दुर्गेश बर्मन◈ डिंडोरी

कलेक्टर विकास मिश्रा के निदेर्शानुसार जिले में अवैध मदिरा के विनिर्माण, संग्रहण, परिवहन व विक्रय के रोकथाम हेतु गत दिवस आबकारी विभाग द्वारा वृत्त डिंडौरी में अवैध शराब बिक्री संबंधी प्राप्त शिकायतों के आधार पर टीम बनाकर जांच किया गया। जिसमें रोशनी बाई पति रिंकू निवासी वार्ड न 15 डिंडौरी से 08 लीटर हाथ भट्टी मदिरा प्लेन जप्त किया गया। इसी प्रकार से धीरज पिता दलपत सिंह निवासी वार्ड न 15 डिंडौरी से 06 लीटर हाथ भट्टी मदिरा प्लेन, जगवती पति गोविंद झरिया वार्ड न 15 डिंडौरी से 05 लीटर हाथ भट्टी मदिरा प्लेन जप्त किया गया है।

इस प्रकार पंजीबद्ध प्रकरणों में जप्त 19 लीटर हाथ भट्टी शराब की अनुमानित कीमत 3800 रुपये है। उक्त सभी प्रकरण म.प्र. आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1) के तहत पंजीबद्ध किए गए हैं।

विकास पर्व के दौरान मुख्यमंत्री युवा अन्नदूत योजना के तीनवाहनों को हरी झण्डी दिखाकर कलेक्ट्रेट परिसर से किया रवाना

दुर्गेश बर्मन◈ डिंडोरी

जिले में विकास पर्व के दौरान कलेक्ट्रेट परिसर से मुख्यमंत्री युवा अन्नदूत योजना के तीन वाहनों को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा राज्य के युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए समय-समय पर विभिन्न कल्याणकारी की योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी क्रम में मध्यप्रदेश में युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए मुख्यमंत्री युवा अन्नदूत योजना प्रारंभ किया गया। इस योजना के तहत वितरित वाहनों से वेयर हाउस से उचित मूल्य दुकान तक खाद्य सामग्री पहुंचाने का काम दिया गया है। इस अवसर, अवध राज बिलैया जिला अध्यक्ष एवं जयसिंह मरावी, आशीष वैश्य, सुधीरदत्त तिवारी राजेंद्र पाल कुशराम सहित एव भारतीय जनता पार्टी के सभी पदाधिकारी गण तथा टाटा मोटर्स से अंचल नामदेव, दिव्य कुमार शर्मा मौजूद थे।

मध्यप्रदेश में युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए मुख्यमंत्री युवा अन्नदूत योजना प्रारंभ किया गया।

कांग्रेस की आदिवासी स्वाभिमान यात्रा पहुंची मंडलाः मशाल रैली निकाल कर किया नर्मदा पूजन

ये आदिवासियों की आजादी की दूसरी लड़ाई है :विक्रांत भूरिया

फतवा समाचार◈ मंडला

19 जुलाई को सीधी जिले से प्रारम्भ हुई कांग्रेस की आदिवासी स्वाभिमान यात्रा सोमवार को मंडला पहुंची। यात्रा का नेतृत्व कर रहे प्रदेश युवक कांग्रेस अध्यक्ष विक्रांत भूरिया और प्रदेश आदिवासी कांग्रेस अध्यक्ष रामू टेकाम ने स्थानीय वृन्दावन गार्डन में आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित किया। यात्रा के दौरान नगर के बिंझिया तिराहे से मशाल रैली निकाली गई इस दौरान विक्रांत भूरिया ने सीधी कांड और मणिपुर मामले को लेकर प्रदेश व केंद्र सरकार को आड़े हाथों लेते हुए जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा प्रदेश में अंधेर नगरी चौपट राजा जैसे हालात हैं इसलिए प्रदेश के

आदिवासियों को एकजुट करने के लिए आदिवासी स्वाभिमान यात्रा निकाली गई है।

18 जिलों से गुजरेगी यात्रा

विक्रांत भूरिया ने कहा कांग्रेस की आदिवासी स्वाभिमान यात्रा प्रदेश के 18 जिलों की 36 आदिवासी आरक्षित विधानसभा से होकर जाएगी। 20 दिनों की इस यात्रा में 2200 किमी का सफर तय कर झाबुआ में 7 अगस्त को यात्रा का समापन होगा। उन्होंने बताया कि सीधी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बंका बैगा के गांव गांधीग्राम से यात्रा की शुरूआत की गई है।

प्रसव के रेफरल मामलों में लापरवाही करने पर 20 स्वास्थ्य कर्मियों को कारण बताओ नोटिस जारी

फतवा समाचार◈ कटनी

कलेक्टर अवि प्रसाद ने स्वास्थ्य महकमें को प्रसव के रेफरल प्रकरणों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की किये जाने के निर्देश दे रखे है। उन्होंने स्वास्थ्य अमले को स्पष्ट निर्देश दिए है कि संस्थागत प्रसव कराये जायें, अनावश्यक रूप से सामान्य प्रसव के मामलों को रेफर नहीं किया जाये। साथ ही गर्भवती महिला की एएनसी के दौरान निर्धारित प्रोटोकॉल के तहत सभी आवश्यक जांचें पूर्ण कराई जायें। इन सब मामलों में कोताही बरतने पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी। विगत दिवस स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान जिले के उपस्वास्थ केन्द्र में पदस्थ 20 स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा गर्भवती महिला को प्रसव हेतु जिला चिकित्सालय रिफर करना सही नहीं पाये जाने तथा गर्भवती महिलाओं की एएनसी के दौरान नियमानुसार एक भी जांचें नही किये जाने पर कलेक्टर श्री प्रसाद द्वारा नाराजगी व्यक्त करते हुए 10 सी.एच.ओ, 1 नर्सिंग आफीसर और 3 एम.पी.डव्ल्यू एवं 6 ए.एन.एम से स्पष्टीकरण तलब करनें के निर्देश मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को दिए है।

इन स्वास्थ्य कर्मियों को जारी हुआ कारण बताओ नोटिस

कलेक्टर श्री प्रसाद के निर्देश के बाद मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ आर.के.आठ्या द्वारा जिन स्वास्थ्य कर्मियों से स्पष्टीकरण तलब किया गया है उनमें पी.एच.सी बाकल के चिकित्सा अधिकारी डॉ सौरभ यादव व ए.एन.एम गायत्री सोनी, सी.एच.सी बहोरीबंद के चिकित्सा अधिकारी डॉ अनुराग शुक्ला तथा नर्सिंग आफिसर जानकी हल्दकार, उपस्वास्थ्य केन्द्र उमरिया की ए.एन.एम भागवती प्रजापति एवं सीएचओ नीलू सिह, उपस्वास्थ्य केन्द्र सरसवाही के एम.पी.डब्ल्यू सुनील दास एवं सी.एच.ओ अनिल सिंह ठाकुर, उपस्वास्थ्य केन्द्र करेला के एम.पी.डव्ल्यू अबरार सब्बाग एवं सी.एच.ओ खुबबू मरकाम ने गर्भवती महिला की एक भी ए.एन.सी की जांच नहीं की। इसके लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। इसी प्रकार सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र विजयराघवगढ़ की चिकित्सा अधिकारी डॉ धनेश्वर सिंह ने गर्भवती महिला को प्रसव हेतु जिला चिकित्साल रिफर किया जो सही नही था। साथ ही उपस्थ्वास्थ्य केन्द्र गोदाना के सीएचओ गौरा लोधी एवं एएनएम अभिलाषा अवस्थी द्वारा महिला की एएनसी की जांच नहीं की गई। उपस्वास्थ्य केन्द्र उमरियापान की एएनएम अर्चना रजक के द्वारा भी गर्भवती महिला की जांचे नहीं की गई। उपस्वास्थ्य केन्द्र बडखेरा की सीएचओ गोपाल शर्मा और उपस्वास्थ केन्द्र कैलवारा कला के सीएचओ प्रीति पटेल तथा एएनएम द्वय सुनीता राव व निशि गर्ग ने भी गर्भवती महिला की एएनसी के दौरान एक भी जांचे नही करी। इसके अलावा पीएचसी बडेरा के चिकित्सा अधिकारी डॉ हर्ष सिंह और एएनएम संगीता अहिरवार द्वारा हईरिस्क नहीं होने के बाद भी गर्भवती महिला को रिफर किया। इस प्रकार इन सभी स्वास्थ्य कर्मियों की गर्भवती महिलाओं के मामले में लापरवाही पर कलेक्टर श्री प्रसाद ने नाराजगी व्यक्त करते हुए इन सभी से दो दिवस के भीतर अपना स्पष्टीकरण सी.एम.एच.ओ कटनी के समक्ष प्रस्तुत करने के निर्देश दिए है।

विकास पर्व 16 जुलाई - 14 अगस्त 2023

विकास पर्व के दौरान प्रदेश में लगभग 15 हजार 175 करोड़ के भूमि-पूजन एवं लोकार्पण

कटनी – प्रदेश में चलाए जा रहे विकास पर्व के दौरान 24 जुलाई तक लगभग 15 हजार 175 करोड़ 9 लाख 5 हजार रुपए लागत के विकास एवं निर्माण कार्यों का भूमि-पूजन/लोकार्पण किया गया। प्रदेश के सभी जिलों में विकास एवं निर्माण कार्यों के लोकार्पण एवं भूमि-पूजन का क्रम जारी है।

प्रदेश में विकास पर्व के नौवे दिन 24 जुलाई को कुल 99 करोड़ 6 लाख 51 हजार रुपए के विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन किया गया। इंदौर जिले में 4 करोड़ 71 लाख 32 हजार, रतलाम जिले में 85 लाख 16 हजार, सतना जिले में 1 करोड़ 44 लाख, पन्ना जिले में 2 लाख 53 हजार, मुरैना जिले में 5 लाख, गुना जिले में 9 करोड़ 19 लाख, खण्डवा जिले में 7 करोड़ 30 लाख 95 हजार, रायसेन जिले में 30 लाख 75 हजार, अशोक नगर जिले में 43 लाख, शहडोल जिले में 24 लाख 90 हजार, मंदसौर जिले में 7 करोड़ 99 लाख 14 हजार, झाबुआ जिले में 65 करोड़ 40 लाख 26 हजार, कटनी जिले में 13 लाख 50 हजार और उमरिया जिले में 97 लाख विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमि-पूजन किये गये।

प्रदेश स्तर पर सीएम हेल्पलाइन में जिला पंचायत कटनी द्वारा

तीसरा स्थान अर्जित करने पर अपर मुख्य सचिव ने जिला सीईओ गेमावत को प्रशंसा पत्र द्वारा की सराहना

फतवा समाचार ◈ कटनी

जिला पंचायत के सीईओ शिशिर गेमावत व्यक्तिगत रुचि लेकर किए गए प्रयासों से सीएम हेल्पलाइन में प्राप्त शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण कराए जाने के फलस्वरुप प्रदेश स्तर पर जिला पंचायत कटनी अब्बल तीन जिलों में स्थान अर्जित कर सकी है। इस हेतु पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव मलय श्रीवास्तव द्वारा सीईओ श्री गेमावत को विभागीय प्रदर्शन में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रशंसा पत्र जारी कर बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए सराहना की गई है। अपर मुख्य सचिव ने जिला सीईओ सहित सीएम हेल्पलाइन का कार्य देख रहे अन्य लोक सेवकों की भी प्रशंसा करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना क है। उल्लेखनीय है कि जिला पंचायत कटनी माह जून 2023 में ,17 जुलाई की स्थिति की ग्रेडिंग में 86.79 प्रतिशत वेटेज के साथ प्रथम समूह में प्रदेश स्तर पर अग्रणी तीन जिलों में शामिल रही है।

अपर मुख्य सचिव ने भविष्य में भी सीएम हेल्पलाइन (181) में प्राप्त आम जनों की शिकायतों को निष्ठा,समर्पण और संवेदनशीलता के साथ संतुष्टिपूर्ण निराकरण किए जाने का अधिकारियों- कर्मचारियों पर भरोसा जताया है।

पर्यटन क्विज प्रतियोगिता के पोस्टर का जिला पंचायत सीईओ ने किया विमोचन

कटनी । जिला पुरातत्व पर्यटन एवं संस्कृति परिषद (डीएटीसीसीसी) एवं स्कूल शिक्षा विभाग के सहयोग एवं समन्वय से जिला स्तरीय पर्यटन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन गुरुवार,27 जुलाई को किया जाएगा। जिला पंचायत के सीईओ शिशिर गेमावत ने पर्यटन क्विज प्रतियोगिता के पोस्टर का विमोचन किया। पर्यटन क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से प्रदेश के समृद्ध शाली इतिहास, गौरवशाली परंपराओं, ऐतिहासिक धरोहरों, सांस्कृतिक विविधताओं, कला, प्राकृतिक समृद्धि ,महापुरुषों और पर्यटन और संस्कृति के महत्व की संभावना आदि से छात्रों को अवगत कराया जा सकेगा। इस दौरान पर्यटन प्रभारी कमलेश सैनी और क्विज मास्टर सचिन श्रीवास्तव भी मौजूद रहे। पर्यटन प्रभारी ने बताया कि पर्यटन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय माधवनगर कटनी में किया जाएगा।

आने वाली पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए वृक्षारोपण आवश्यक: श्रीधर सिंह

फतवा समाचार ◈ सतना

श्रीधर सिंह ने कहा है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यदि धरती को सुरक्षित रखना है तो वृक्षारोपण आवश्यक है। पर्यावरण नहीं बचा तो आने वाली पीढ़ियों को अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अधिक संघर्ष करना होगा। श्रीधर सिंह ने आज अबेर के बाणसागर परिसर में पौध-रोपण साथ कदेल के पौधे लगाए। श्री सिंह ने कहा कि पेड़ हमारे लिए जीवन के समान हैं, यह ऑक्सीजन देने के साथ कई जीव-जंतुओं को आश्रय देते हैं। पेड़ जल अवशोषित कर, गर्मी के दिनों में बूंद-बूंद पानी छोड़ कर नमी बनाए रखने में भी सहायक हैं। श्रीधर ने जन-सामान्य से अपने जन्म-दिन, विवाह-वर्षगांठ और माता-पिता के पुण्य-स्मरण में पौधे लगाने का आहवान किया।

आज लगाए गए कदेल को पर्यावरण शुद्ध करने वाला माना गया है। यह छायादार वृक्ष के रूप में भी जाना जाता है। इसका धार्मिक और आयुर्वेदिक महत्व भी है।

कलेक्टर जनसुनवाई: रीवा में 189 आवेदकों के प्रकरणों की हुई सुनवाई

अफसरों को समय-सीमा में निराकरण के निर्देश

फतवा समाचार ◈ रीवा

रीवा कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में मंगलवार को साप्ताहिक जनसुनवाई की गई। यहां अपर कलेक्टर नीलमणि अग्निहोत्री ने 189 लोगों की समस्याएं सुनीं। साथ ही संबंधित विभाग के अधिकारियों को समय सीमा में निराकरण के निर्देश दिए। इस दौरान ग्रामीण क्षेत्र से आए फरियादियों की शिकायतों को संयुक्त कलेक्टर संजीव पाण्डेय और डिप्टी कलेक्टर एलएन गर्ग ने भी सुनवाई की है।

जनसुनवाई में कमलेश यादव निवासी चांद कोनीकला और कुसुम कली साकेत कल्याणपुर ने सीमांकन का आवेदन दिया। वहीं व्यौहरा के छोटेलाल पटेल, हुजूर तहसील के श्यामसुंदर चौधरी, नष्टिगवां के शिवबहोर यादव, पिपरा के राजेश चतुर्वेदी के अतिक्रमण हटाने का आवेदन, वीरेन्द्र कोल निवासी तिलया, पीर बानो निवासी घोघर, सुशील कुमार पाण्डेय बरेती और सर्किल सिंह निवासी त्योंथर के अवैध अतिक्रमण हटाने का आवेदन दिया।

गौरी शाहपुर के निवासियों ने आम रास्ता को अतिक्रमण मुक्त करने, उमा सिंह द्वारा जम्मू रोड और तालाब की नाप कराने, मानवती साकेत करहिया के रास्ता निर्माण कार्य को रोकने के आवेदन में संबंधित तहसीलदार को कार्यवाही करने के निर्देश दिए। चोरहटा निवासी रामकरण तिवारी के बंटवारा आवेदन पर तहसीलदार हुजूर को कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया।

बुढ़वा रायपुर कर्चुलियान एवं तिघरा सिरमौर के रहवासियों ने पानी की समस्या का आवेदन देकर हैण्डपंप सुधार का अनुरोध किया। अपर कलेक्टर ने कार्यपालन यंत्री पीएचई को बुलाकर तत्काल समस्या के निराकरण के निर्देश दिये। लालमणि साकेत निवासी सीटी नौढ़िया के वृद्धवस्था पेंशन स्वीकृत करने का आवेदन दिया।

तब अपर कलेक्टर ने संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय को पेंशन स्वीकृत करने की कार्यवाही करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई में ग्रामीण विकास, खाद्य, बिजली बिल सुधार एवं नवीन कनेक्शन प्रदाय और स्कूल शिक्षा विभाग के आवेदनों को संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही के लिए प्रेषित किया। जनसुनवाई में दो दर्जन से ज्यादा विभागों को आला अधिकारी उपस्थित रहे।

छोटा होगा रीवा का रेल से सफर, कोरांव के रास्ते बिछेगी नई रेल लाइन

फतवा समाचार ◈ रीवा

प्रयागराज से मध्य प्रदेश के रीवा की सीधा रेलसंपर्क किए जाने की तैयारी शुरू हो गई है। जिले के मेजा रोड स्टेशन से मांडा, कोरांव होते हुए रीवा तक नई रेल लाइन बिछाए जाने का मामला रेलवे बोर्ड पहुंचा है। एनसीआर की ओर से भेजे गए पत्र में इस लाइन के लिए सर्वे करने का प्रस्ताव भेजा गया है। अभी सतना होकर ही ट्रेन द्वारा रीवा पहुंचा जाता है। इस रेल मार्ग से प्रयागराज से रीवा की कुल दूरी 227 किमी की तय करनी पड़ती है। फिलहाल इस मार्ग पर प्रयागराज से एकमात्र ट्रेन आनंद विहार-रीवा सुपरफास्ट है। यहां से इसकी रवानगी सुबह 6.10 बजे हती है जो 11.10 बजे रीवा पहुंचती है। वहीं सड़क मार्ग से प्रयागराज से रीवा की कुल दूरी तकरीबन 130 किमी है। इस मार्ग पर नारीबारी, चाकघाट, सोहागी, मनगवा आदि स्थान पड़ते हैं। अब रीवा तक रेल सफर छोटा करने की पहल हुई है। इस संबंध में रेलवे बोर्ड को प्रस्ताव भेजा गया है कि मेजा रोड या मांडा रेलवे स्टेशन से कोरांव होते हुए रीवा तक नई रेल लाइन बिछाई जाए। अभी प्रयागराज में कोरांव एकमात्र ऐसी विधानसभा है जो रेलवे लाइन से अछूती है। इस संबंध में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र की सांसद डा. रीता बहुगुणा जोशी ने भी उत्तर मध्य रेलवे प्रशासन को पूर्व में पत्र भेजकर कोरांव होते हुए रीवा तक नई रेल लाइन बिछाने की बात कही है। फिलहाल सांसद के इस प्रस्ताव पर उत्तर मध्य रेलवे प्रशासन द्वारा रेलवे बोर्ड को पत्र भेजकर रीवा तक लाइन बिछाने के लिए सर्वे की स्वीकृति मांगी है। अफसरों का कहना है कि बोर्ड द्वारा यह स्वीकृति दी जा सकती है। इस बारे में सांसद डा. रीता बहुगुणा जोशी का कहना है कि अगर रीवा तक नई लाइन बिछाई जाती है तो प्रयागराज से उसकी दूरी काफी कम हो जाएगी।

छापामार कार्रवाई में 500 ग्राम गांजा जब्त

फतवा समाचार ◈ रीवा

पुलिस ने घेराबंदी कर पहले एक तस्कर को पकड़ा, फिर पिस्टल व चाकू के साथ दो बदमाश धराए

रीवा जिले में अवैध नशे के खिलाफ पुलिस का अभियान जारी है। दो दिन पहले एक मुखबिर ने पुलिस को सूचना। सटीक खबर मिलने पर नईगढ़ी पुलिस ने संबंधित गांव में छापामार कार्रवाई की। वहां तस्कर के घर की तलाशी ली गई। तभी एक थैले से आधा किलो गांजा जब्त किया गया है। फिलहाल पुलिस ने नशे के सौदागर को घेराबंदी कर पकड़ लिया है। साथ ही एनडीपीएस एक्ट लगाकर जेल भेज दिया है। नईगढ़ी थाना प्रभारी उपनिरीक्षक जगदीश सिंह ठाकुर ने बताया कि 24 जुलाई की रात देहात भ्रमण के दौरान सटीक जानकारी आई। सूचनाकर्ता ने दावा किया कि देवरी सेंगरान गांव का नन्दलाल साकेत पुत्र भगवानदीन साकेत 35 वर्ष अवैध रूप से से गांजा बिक्री कर रहा है। तुरंत टीम बनाकर दबिश दी। इसके बाद आरोपी नन्दलाल साकेत के घर से 6 हजार रुपए का 500 ग्राम गांजा बरामद किया है।

पिस्टल के साथ एक आरोपी गिरफ्तार : इसी रात हडिया चौराहा पहुंचकर पुलिस ने दबिश दी। वहां आयुष्मान दुबे उर्फ मोहित पुत्र राजेश दुबे 22 वर्ष निवासी हडिया आम लोगों को पिस्टल लहराते हुए धमका रहा था। ऐसे में आरोपी को गिरफ्तार कर 1 पिस्टल, 1 जिंदा कारतूस बरामद किया है। इस मामले में नईगढ़ी पुलिस ने आर्म्स एक्ट का प्रकरण दर्ज किया है।

बका लहराते अपराधी मिला : बताया गया कि देर रात भैया उर्फ नवीन कुमार उपाध्याय पुत्र राजबहोर उपाध्याय 22 वर्ष निवासी सोनवर्षा के संबंध में सूचना आई। ग्रामीणों ने कहा कि आरोपी बका लहराते हुए धमका रहा है। जिसके बाद नईपुलिस ने आरोपी को घेराबंदी कर पकड़ लिया है। इसके बाद आर्म्स एक्ट लगाते हुए कोर्ट में पेश किया है।

सीधी में लोकायुक्त की टीम ने दो रिश्वतखोर अफसरों को किया गिरफ्तार

फतवा समाचार ◈ सीधी

आदिम जाति कल्याण विभाग के सहायक आयुक्त राजेश परिहार और सहायक अधीक्षक अनिरुद्ध पांडेय को 80 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया। रीवा लोकायुक्त की टीम ने सीधी सर्किट हाउस में यह कार्रवाई की। सिहावल के छात्रावास अधीक्षक अशोक पांडेय की शिकायत पर लोकायुक्त की टीम शुक्रवार को यहां पहुंची। लोकायुक्त इंस्पेक्टर जिया उल हक ने बताया कि छात्रावास अधीक्षक सिहावल का ट्रांसफर आदिम जाति कल्याण विभाग के अधिकारियों ने रूदा भदौरा कर दिया था। ट्रांसफर रुकवाने के बदले में 1 लाख रुपए रिश्वत की मांग की गई थी। सिहावल अधीक्षक अशोक पांडे 20 हजार पहली किस्त दे चुके थे। उसके बाद अधीक्षक अशोक पांडे आज 80 हजार की रिश्वत की दूसरी किस्त देने आए थे। लोकायुक्त रीवा की 12 सदस्यों की टीम ने सहायक आयुक्त राजेश परिहार सहित सहायक अधीक्षक अनिरुद्ध पांडे को गिरफ्तार कर लिया है। जिसके बाद अब सीधी के सर्किट हाउस में कार्यवाही की जा रही है।

आदिम जाति कल्याण विभाग के सहायक आयुक्त और सहायक अधीक्षक ने लिए 80 हजार रुपए

रिटायर्ड पटवारी को 3 साल की कैद

सवा 4 एकड़ सरकारी जमीन को फर्जी तरीके से किया था निजी, रिटायरमेंट के 15 साल बाद गया जेल

फतवा समाचार ◈ सतना

सतना जिले की अमरपाटन तहसील में पदस्थ रहे एक पूर्व पटवारी को रिटायरमेंट के 15 वर्ष बाद जेल जाना पड़ा है। सेवानिवृत्त पटवारी को एक सरकारी जमीन के फर्जीवाड़े में अदालत ने 3 साल कैद और 2 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है। द्वितीय अपर सत्र न्यायाधीश अमरपाटन राघवेंद्र सिंह चौहान ने अमरपाटन तहसील अंतर्गत कोटरा हलका के पटवारी रहे 75 वर्षीय नर्मदा प्रसाद चतुर्वेदी पिता भगवानदास चतुर्वेदी निवासी खमरिया को आईपीसी की धारा 467 एवं 218 के तहत दोषी करार दिया है। अदालत ने सेवानिवृत्त पटवारी नर्मदा प्रसाद को 3 वर्ष के कारावास और 2 हजार रुपए जुमार्ने की सजा से दंडित किया है। प्रकरण में शासन की तरफ से अतिरिक्त अपर लोक अभियोजक पंकज कुमार पटेल ने पक्ष रखा। जीपी कार्यालय के प्रवक्ता उमेश कुमार शर्मा ने बताया कि यह प्रकरण कोटरा हलका की 4 एकड़ 24 डिसिमिल शासकीय आराजी को निजी स्वत्व में दर्ज किए जाने का है। कोटरा हलका की आराजी नंबर 176 रकबा 4 एकड़ 24 डिसिमिल वर्ष 2005-06 में मप्र शासन के स्वामित्व में शासकीय राजस्व अभिलेखों में दर्ज थी। उस वक्त कोटरा हलका में नर्मदा प्रसाद चतुर्वेदी पटवारी पदस्थ थे। पटवारी ने शासकीय अभिलेखों में सफेदा लगा कर यह आराजी ग्राम जुड़मनिया के राजकुमार सिंह पिता रुद्र प्रताप सिंह के नाम दर्ज कर दी। इसकी शिकायत मिलने पर नायब तहसीलदार वृत्त मौहारी ने जांच की थी। नायब तहसीलदार की जांच रिपोर्ट के आधार पर अमरपाटन थाना पुलिस को सितंबर 2009 में पटवारी के खिलाफ प्रकरण दर्ज करने के लिए लिखा गया था।

अधिकारी 1 से 5 वर्ष से लंबित प्रकरणों का 31 अगस्त तक निराकरण करें : संभागायुक्त

रीवा कमिश्नर कार्यालय के सभागार में बैठक आयोजित, संभागायुक्त अनिल सुचारी ने राजस्व प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की

फतवा समाचार ◈ रीवा

रीवा कमिश्नर कार्यालय के सभागार में बैठक आयोजित की गई। संभागायुक्त अनिल सुचारी ने राजस्व प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। कहा कि सभी राजस्व अधिकारी क्षेत्र का नियमित भ्रमण करें। अधीनस्थ कार्यालयों का रोस्टर के अनुसार निरीक्षण करें। लंबित राजस्व प्रकरणों की नियमित सुनवाई करें। रीवा जिले में जुलाई माह में राजस्व प्रकरणों के निराकरण का विशेष प्रयास किया है। जिले को 59734 प्रकरण निराकृत करने पर प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। रीवा जिले में एक से 19 जुलाई के मध्य 9344 प्रकरण निराकृत किए गए हैं। अन्य जिले भी इसी तरह के प्रयास करके राजस्व प्रकरणों का तेजी से निराकरण करें। सीधी कलेक्टर अविवादित नामांतरण और सीमांकन के प्रकरण प्राथमिकता से निराकृत करें। लोक सेवा गारंटी अधिनियम में तय समय सीमा में प्रकरणों का निराकरण करें। अफसर तहसीलवार समीक्षा करें। संभागायुक्त ने कहा कि धारणाधिकार अधिनियम के तहत संभाग में 16113 प्रकरण दर्ज किए गए हैं। पात्र हितग्राहियों के प्रकरण दर्ज कराकर इनका निराकरण करें। सतना और सीधी जिले को इसमें विशेष प्रयास की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री आवासी भू अधिकार योजना से वर्षों से निवास कर रहे गरीब परिवारों को आवासीय जमीन का अधिकार पत्र दिया जा रहा है।

अब तक संभाग में 92872 आवेदन पत्र मंजूर किए गए हैं। अभियान चलाकर पात्र हितग्राहियों को भू अधिकार पत्र प्रदान करें। बैठक में बताया गया कि रीवा संभाग में 19 जुलाई तक 140507 राजस्व प्रकरणों का निराकरण किया गया। इसमें नामांतरण के 49965, सीमांकन के 27164 तथा बंटवारा के 11537 प्रकरण शामिल हैं। प्रकरणों के निराकरण के अनुसार रीवा संभाग प्रदेश में प्रथम स्थान पर है।

जानबूझकर किश्त देने में देरी तो कार्रवाई करें

पीएम आवास की समीक्षा करते हुए कहा कि शहरी क्षेत्र में जिन हितग्राहियों ने आवास का निर्माण पूरा कर लिया है उन्हें तीसरी किश्त की राशि जारी करें। दूसरी किश्त के पात्र हितग्राहियों को तत्काल राशि जारी करें। संयुक्त संचालक नगरीय विकास आवास योजना के राशि वितरण की निकायवार समीक्षा करें। यदि कोई उटड जानबूझकर किश्त देने में देरी कर रहा है तो उसके विरूद्ध कार्यवाही की जाएगी। बैठक में बिजली की आपूर्ति की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने कहा कि बिजली के बिलों और बिजली की आपूर्ति के संबंध में लगातार शिकायतें मिल रही हैं। अधीक्षण यंत्री इसमें सुधार के प्रयास करें। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में बिजली की आपूर्ति बाधित होने से लोगों को बहुत कठिनाई होती है। बिगड़े ट्रांसफार्मरों को बदलने के संबंध में भी उपभोक्ताओं को सही जानकारी दें। सतना कलेक्टर अनुराग वर्मा ने कहा कि जिले में पिछले एक महीने में तीन दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। बिजली लाइनों की सुधार के लिए विभाग समुचित व्यवस्था करे। कलेक्टर सीधी ने साकेत मालवीय ने कहा कि ट्रांसफार्मरों के बिगड़े होने और गांव में बिजली की आपूर्ति बंद होने के संबंध में विभागीय अधिकारी प्रतिदिन कलेक्टर को अवगत कराएं। जिससे समस्या का समाधान किया जा सके।

सिटीजन फीडबैक बढ़ाने के प्रयास करें : ग्रामीण क्षेत्र में ढट आवास योजना से रीवा संभाग में 4 लाख 8 हजार 321 आवास बनाए गए हैं। इनके पूर्णता का प्रतिशत 90 है। अभी भी 45 हजार आवास अधूरे हैं। स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 आरंभ हो गया है। नगरीय निकायों तथा नगर निगमों में सिटीजन फीडबैक बढ़ाने के प्रयास करें। सभी निकाय गत वर्ष की रैंकिंग में सुधार के प्रयास करें। सिंगरौली और जैतवारा की रैंकिंग सुधार के लिए अतिरिक्त प्रयास करें।

10 अगस्त को मुख्यमंत्री रीवा दौरे पर

लाड़ली बहना योजना में जिन महिलाओं के बैंक खातों में डीबीटी नहीं हो पाया है उनके नए बैंक खाते खुलवाकर योजना का लाभ दें। विभिन्न कारणों से असफल हुए भुगतानों की भी समीक्षा कर उनका निराकरण सुनिश्चित करें। आगामी 10 अगस्त को मुख्यमंत्री जी रीवा से ही लाड़ली बहना योजना की आगामी किश्त की राशि वर्चुअल माध्यम से जारी करेंगे।

मुख्य अभियंता को कारण बताओ नोटिस

बैठक से अनुपस्थित मुख्य अभियंता पूर्वी क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी को कारण बताओ नोटिस दिया है। बैठक में संबल योजना में पात्र मजदूरों के पंजीयन, अनुग्रह सहायता राशि के वितरण तथा अंकुर अभियान के तहत वृक्षारोपण की समीक्षा की गई। कमिश्नर ने कहा कि स्वीकृत अमृत सरोवरों का निर्माण एक माह में हर हाल में पूरा कराएं। बैठक में सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की भी समीक्षा की गई।

ये अधिकारी बैठक में हुए शामिल

सिंगरौली जिपं सीईओ गजेन्द्र सिंह नागेश ने गौशाला प्रबंधन, वृक्षारोपण से आजीविका निर्माण और नदी नालों के पुनर्जीवन, जल संरक्षण के कार्यों का प्रस्तुतिकरण किया। बैठक में अपर कमिश्नर छोटे सिंह, रीवा कलेक्टर प्रतिभा पाल, सिंगरौली कलेक्टर अरूण परमार, रीवा निगमायुक्त संस्कृति जैन, सतना निगमायुक्त राजेश शाही, सिंगरौली निगमायुक्त पवन सिंह समस्त सीईओ व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

मेट्रो कई आधुनिक सुरक्षा प्रणालियों से होगी लैस, सितंबर तक मेट्रो का ट्रायल रन करवाने की कोशिश

भोपाल नप्र। राजधानी भोपाल और इंदौर में बन रही मेट्रो कई आधुनिक सुरक्षा प्रणालियों से लैस होगी, जिसमें अनअटेंडेंट आब्जेक्ट आइडेंटिफिकेशन सिस्टम और डिरेलमेंट डिटेक्शन सिस्टम के जरिए यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी। इसके अलावा ट्रेन के संचालन के लिए इनबिल्ट साइबर सिक्योरिटी सिस्टम का भी इस्तेमाल किया जाएगा। सभी सुरक्षा प्रणालियों के कारण जहां ट्रेन में सफर आरामदायक होगा। वहीं यात्रियों को पूरी सुरक्षा भी मिलेगी।

भोपाल और इंदौर में मेट्रो का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। आगामी सितंबर माह में दोनों महानगरों में मेट्रो का ट्रायल रन करवाने की कोशिश है। मप्र मेट्रो कार्पोरेशन लिमिटेड के अधिकारियों ने बताया कि मेट्रो ट्रेन के कोच और स्टेशन के साथ अन्य स्थनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। इनमें कैप्चर होने वाले वीडियो से संदिग्ध व्यक्ति का चेहरा मिलान कर वीडियो एनालिटिक्स सिस्टम के जरिए उसकी पहचान की जाएगी। इसके लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम की मदद ली जाएगी। इसकी मदद से डाटा तैयार किया जाएगा। जिसमें अपराधियों और गुमशुदा बच्चों के फोटो अपलोड किए जाएंगे। अपराधी जैसे ही कैमरे के संपर्क में आएगा, अलार्म बजना शुरु हो जाएगा। इस सिस्टम को मेट्रो के सेंट्रल सर्वर से जोड़ा जाएगा।

लंबे समय तक वीडियो फुटेज संरक्षित रखे जा सकेंगे। खास बात यह होगी कि इस सिस्टम के तहत चश्मा पहने हुए व्यक्ति की पहचान करना भी आसान होगा। अनअटेंडेंट आब्जेक्ट आइडेंटिफिकेशन सिस्टम की सहायता से मेट्रो और प्लेटफार्म पर हर वस्तु पर मेट्रो के संचालन के दौरान सुरक्षाकर्मी बारीक नजर रखेंगे। ऐसे में ऐसा कोई भी सामान जिसका कोई दावेदार नहीं होगा। उसे तुरंत ही प्लेटफार्म से हटाया जाएगा। मेट्रो के संचालन का सिस्टम पूरी तरह से साइबर सिक्योरिटी से लैस होगा। ऐसे में इसे हैक करना लगभग नामुमकिन होगा। साथ ही इससे यह सुनिश्चित होगा कि हर ट्रेन का संचालन सही रास्ते पर है।

डिरेलमेंट डिटेक्शन सिस्टम के जरिए ट्रैक पर किसी तरह की बाधा के होने पर या मेट्रो ट्रेन के डिरेलमेंट होने पर तुरंत जानकारी मिलेगी। ऐसे में ट्रेन को समय पर रोका जा सकेगा। इससे दोनों ओर से चल रही मेट्रो में यात्रियों की सुरक्षा पुख्ता होगी।

ओएलएक्स पर दूसरे का मकान बेचने का एड देकर रेल्वे कर्मचारी से लाखों की ठगी

भोपाल नप्र। मिसरोद पुलिस ने रेलवे कर्मचारी की शिकायत पर शातिर के खिलाफ ठगी का मामला कायम किया है। जालसाज ने दूसरे का मकान ओएलएक्स पर मकान बेचने का विज्ञापन देते हुए फरियादी से मकान का 58 लाख में सौदा कर एग्रीमेंट भी करते हुए 22 लाख की रकम एडवांस ले ली। रजिस्ट्री कराने के समय धोखाधड़ी का खुलासा होने पर उसने असली मकान मालिक के एकांउट में 13 लाख रुपए वापस कर दिए लेकिन बाकी की 9 लाख की रकम नहीं लौटाई। इसके बाद मामला पुलिस थाने पहुंच गया। पुलिस के अनुसार हबीबगंज स्थित रेलवे कॉलोनी में रहने वाले फरियादी 57 वर्षीय रामेश्वर सिंह ने लिखित शिकायत करते हुए बताया की वह रेलवे कर्मचारी हैं। उन्हें एक मकान खरीदना था, इसी दौरान करीब तीन महीने पहले उन्होनें ओएलएक्स पर एक मकान बेचने का विज्ञापन देखा था।

देखने में अच्छा लगने पर रामेश्वर ने अपने प्रापर्टी डीलिंग का काम करने वाले अपने परिचित लीलाधर सिंह से बातचीत कर लीलाधर के जरिये ओएलएक्स पर दिए गए मोबाइल नंबर पर संपर्क कर मकान खरीदने की इच्छा जताई। विज्ञापन में दिये गये मोबाइल नंबर वाले व्यक्ति ने अपना नाम संपत पाटिल भाऊ बताते हुए कहा कि वो मकान चिनार उपवन दानिश नगर मिसरोद में है, और वह उसका मालिक है। बातचीत के बाद उसने फरियादी को मकान देखने के लिये बुलाया। मकान देखने के बाद 22 अप्रैल को फरियादी ने खुद को मकान मालिक बताने वाले संपत से बातचीत की और उनके बीच 58 लाख में मकान का सौदा तय हो गया।

अज्ञात बदमाश ने वाहनों में आग लगाई

भोपाल नप्र। कमला नगर थाना इलाके में स्थित बीजासेन दुर्गा मंदिर के सामने खड़े दो पहिया वाहनो में अज्ञात बदमाश ने आग लगा दी। दोनों वाहनो में लगी आग की चपेट मे आकर पास में खड़ा अन्य बाइक भी चपेट में आ गई। पुलिस के मुताबिक बिजासेन नगर, दुर्गा मंदिर के सामने कमला नगर में रहने वाले 19 वर्षीय उमेश धुर्वे पिता सिद्ध कुमार धुर्वे ने पुलिस को बताया कि शनिवार रात वह अपनी मां को बाइक से डिपो चौराहा छोड़ने गया था। रात करीब 12 बजे लौटने के बाद उसने अपनी स्कूटी मंदिर के पास खड़ी कर दी। उस समय वहॉ सोनू सिंह ठाकुर की बाइक और उन दोनो वाहनो से थोड़ी दूरी पर मैकेनिक अजय वर्मा के पास काम के लिये आई एक और बाइक भी खड़ी थी। अल सुबह करीब 6 बजे मोहल्ले में रहने वाली महिला ने उसे बताया कि उसकी गाड़ी में आग लगी है। उमेश मौके पर पहुंचा तो देखा की उसकी स्कूटी और पास में खड़ी सोनू की बाइक पूरी तरह से जल चुकी थी, और उनके वाहनो से थोड़ी दूरी पर खड़ी मैकैनिक की बाइक कम जली थी।

तेजी से फैल रहा एडीनो वायरस

कोरोना वायरस जैसे हैं लक्षण, रहें सावधान

भोपाल नप्र। मौसम में बदलाव से एडिनो वायरस आंख आना का खतरा बढ़ गया है। यह एक ऐसा वायरस है। जिसके प्रभाव से आंखें लाल व खुजली होना, जलन महसूस होने की समस्या होती है। डॉक्टरों की भाषा में इसे कंजेक्टिवाइटिस कहा जाता है। इस बीमारी में बुखार, आवाज बैठना, नाक बहना आदि की समस्या सामने आ रही है। इस बीमारी के शहर के अस्पतालों में पीड़ित मरीज तेजी से पहुंच रहे है। इसमें सबसे ज्यादा मरीज हमीदिया की ओपीडी में पहुंच रहे है।

मौसम बढ़ा रहा संक्रमण

चिकित्सकों का कहना है कि हल्की बारिश के बाद गर्मी और उमस बढने से इस बार आई फ्लू के मरीजों की संख्या ज्यादा आ रही है। इस बीमारी में बच्चों के साथ बुजुर्ग भी पीडित है। इसमें ठीक होने में छह से सात दिन का समय लग रहा है। इसके बचाव का सबसे बेहतर उपाय है कि लोग आंखों से हाथ को दूर रखें। बार- बार आंख छूने पर यह बीमारियां फैलती है। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ राजेश चौहान के मुताबिक आंखों में होने वाली किसी भी तरह के समस्या को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। अगर समय रहते समस्या का निदान हो जाए तो न सिर्फ आंखों को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है साथ ही लंबे समय तक रोशनी को बनाए रखना भी आसान हो जाता है।

सिर और आंखों में अक्सर दर्द की समस्या

लगातार आंख या सिर में दर्द की समस्या बने रहना आंखों की गंभीर बीमारियों की ओर संकेत हो सकता हैं, इसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। कंप्यूटर और मोबाइल जैसे स्क्रीन का अधिक इस्तेमाल करने वाले लोगों में इस तरह की दिक्कत अधिक देखने को मिलती है। आंखों में दर्द के कई कारण हो सकते हैं, इसलिए किसी नेत्र रोग विशेषज्ञ से मिलकर समस्या का निदान और इलाज कराना बहुत आवश्यक माना जाता है।

आंखों में चुभन या पानी आना

पिछले कुछ वर्षों में लोगों में ड्राई आइज की समस्या काफी तेजी से बढ़ती हुई देखी गई है। इस स्थिति में आंखों में चुभन, लालिमा और कुछ स्थितियों में आंखों को खोलने तक में दर्द का अनुभव हो सकता है। इसी तरह आंखों से अक्सर पानी आने की समस्या को भी अस्वस्थ संकेत माना जाता है। यह दोनों ही स्थितियां समय के साथ आंखों की रोशनी को प्रभावित करती हैं साथ ही कई अन्य गंभीर बीमारियों का कारण भी बन सकती हैं। इसे अनदेखा न करें।

साफ और स्पष्ट न दिखना

कई कारणों से आपकी दृष्टि की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। मोतियाबिंद, उम्र के साथ आंखों में होने वाली समस्या, मैकुलर ओडिमा जैसी आंखों की बीमारियां भी आपकी दृष्टि को कमजोर कर देती हैं। यदि आपको भी सामान्य प्रकाश में चीजों को स्पष्ट देखने में समस्या का अनुभव हो रहा हो तो इस बारे में किसी नेत्र रोग विशेषज्ञ से सलाह ले लें। समय पर इलाज हो जाने से आंखों की रोशनी जाने से बचाई जा सकती है।

रात के समय कम दिखाई देना

क्या आपको दिन ढलते ही आंखों की रोशनी में कमी का अनुभव होता है? अगर हां तो इस बारे में तुंरत किसी विशेषज्ञ से सलाह ले लें। मोतियाबिंद, रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा जैसी कुछ स्थितियां आंखों को स्वाभाविक रूप से अलग-अलग रोशनी वाले परिवेश, विशेष रूप से अंधेरे में समायोजित करने से रोक सकती हैं। इस तरह की दिक्कतों से बचे रहने के लिए समय पर स्थिति का सही निदान और इलाज किया जाना आवश्यक है।

संक्षिप्त समाचार

मानव अधिकार आयोग ने पुलिस से मांगा जवाब

भोपाल नप्र। इंदौर जिले में स्थित तिन्छा वॉटरफॉल में सैलानियों की सुरक्षा के लिये तैनात पुलिसकर्मियों का जाम छलकाते हुए एक कथित वीडियो वायरल होने के मामले में मप्र मानव अधिकार आयोग ने संज्ञान लेते हुए कलेक्टर-एसपी को जांच कराने के निर्देश देते हुए 15 दिन के भीतर जांच रिपोर्ट पेश करने के निर्देश दिये है। जानकारी के अनुसार, पुलिसकर्मियों का ड्यूटी छोड़ शराब पीने, दुर्व्यवहार करने का एक कथित वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। मामले में आयोग ने अधिकारियों को यह निर्देश भी दिये है कि ऐसे सार्वजनिक स्थल पर किसी भी व्यक्ति द्वारा शराब के सेवन की परिस्थितियों को नियंत्रित करने के संबंध में की गई कार्यवाही के बारे में भी प्रतिवेदन दें, जिससे ऐसे सार्वजनिक स्थल पर आने वाले सैलानियों के परिवारजनों, महिलाओं आदि की समुचित सुरक्षा सुनिश्चित हो और इस प्रकार की अवांछित गतिविधियों को रोका जा सके। इसके साथ ही राजधानी भोपाल के अशोका गार्डन थाना इलाके में बीते शनिवार को 12वीं पास कर चुके छात्र द्वारा फांसी लगाकर खुदकुशी किये जाने की घटना पर भी आयोग ने संज्ञान लेकर पुलिस कमिश्नर, भोपाल से प्रकरण की जांच कराकर तीन सप्ताह में जवाब मांगा है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार मृतक के पिता को बेटे के स्कूल से टीसी लेने के लिये दस हजार रूपये फीस जमा करनी थी।

मकान में जमी थी जुए की फड़ क्राइम ब्रांच ने हजारों की रकम के साथ 10 जुआरी पकड़ाए

भोपाल नप्र। क्राइम ब्रांच भोपाल की टीम ने गौतम नगर थाना इलाके में जुआ खेल रहे 10 जुआरियों को गिरफ्तार कर उनके पास से हजारो की नगद जप्त की है। कार्यवाही के दौरान एक आरोपी राजा पंजाबी फरार हो गया जिसकी तलाश की जा रही है। क्राइम ब्रांच अधिकारियो ने जानकारी देते हुए बताया कि मुखबिर द्वारा सूचना मिली कि गौतम नगर के चौकसे नगर के मकान नंबर 108 में सुनील कुमार के मकान मे कुछ लोग जुआ खेल रहे है। खबर मिलने पर पुलिस ने मुखबिर द्वारा बताये गये मकान की घेराबंदी कर दबिश दी। कार्यवाही के दौरान मकान के अंदर वाले कमरे में कई लोग ताश के पत्तों पर जुआ खेलते मिले जिन्हें पकड लिया गया। पकड़े गय आरोपियो के नाम जहीर उद्दीन, सुनील कुमार, अनीस खान, पवन खत्री, मुन्ना मिया, जाकिर अली, कमल सिंह साहू, नवेद खान, अबरार ओर इरशाद बताये गये है। सभी आरोपी शहर के अलग-अलग इलाको के रहने वाले है। पुलिस ने मौके से ताश के पत्ते सहित 30 हजार से अधिक की रकम बरामद जप्त करते हुए उनके खिलाफ जुआ एक्ट का मामला दर्ज किया है।

जालसाज ने विधवा महिला से किराये पर ली कार, फिर उसके मृतक पति के फर्जी दस्तावेज बनाकर बेच दी

भोपाल नप्र। कोलार इलाके में जालसाज द्वारा विधवा महिला से किराये पर कार लेकर उसके मृतक पति के नाम से बेचने का मामला सामने आया है। खुलासा होने पर पीड़ीता पुलिस के पास पहुंची थी। मिली जानकारी के मुताबिक 610 क्वार्टर कोलार में रहने वाली 38 वर्षीय मुबारिका खान ने लिखित शिकायत करते हुए बताया की वो घरेलू महिला हैं। कोरोना काल के दौरान साल 2020 में उनके पति शाकिर अली का देहांत हो गया था। उनके पति के नाम पर स्विफ्ट डिजायर कार थी। आमदानी के लिये उन्होनें रिश्तेदारो के कहने पर उस कार को किराए पर देने का फैसला किया। बाद में उन्होनें कार को बरखेड़ी में रहने वाले परिचित ताहिर खान जुलाई 2022 में 30 हजार प्रतिमाह किराए पर चलाने के लिए दे दिया था। मुबारिका ने जब उसे फोन कर किराया देने को कहा तब पहले तो आरोपी बहानेबाजी कर उन्हें टालता रहा और फिर अपना मोबाइल बंद कर घर से गायब हो गया। सदेंह होने पर परेशान फरियादिया ने अपने स्तर गाड़ी के बारे जानकारी जुटाई तब उसे पता चला कि उनकी किराये पर ली गई कार बैरागढ़ निवासी मोहित परिहार के पास है।

नाले में फेंकी एक्सपायरी डेट की दवाएं, फैल रहा प्रदूषण

भोपाल नप्र। राजधानी में एक्सपायरी डेट की खतरनाक रसायनों वाली दवाएं नाला-नालियों में फेंकी जा रही है, इससे प्रदूषण तेजी से फैल रहा है। नाले में कबाड़ी उन दवाओं से बोतल व पानी पानी के लिए उनके अंदर की दवाओं को पानी में खाली कर रहे हैं। यह सब कुछ खुलेआम हो रहा है लेकिन कोई टोकने और रोकने वाला नहीं है। इस बारे में पर्यावरणविद् डा. सुभाष सी पांडेय का कहना है कि दवाओं में कई तरह के केमिकल होते हैं, जो पर्यावरण, उसमें पाए जाने वाले जीव-जंतु, वनस्पति व जल को दूषित कर सकते हैं। इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

सोमवार को पंड़ित खुशीलाल शर्मा आयुर्वेद कालेज के सामने के नाले में दवाएं फेंकी हुई देखी गई जिनकी उपयोग की तारीखें निकल गई है। नजदीक में खुशीलाल आयुर्वेद अस्पताल के होने से यह कहा जाने लगा कि यह दवाएं यहीं उपयोग की जाने वाली हो सकती है लेकिन जब संस्थान के डीन डा. उमेश शुक्ला से पूछा गया कि दवाएं अस्पताल से फेंकी गई है तो उन्होंने कहा कि जिन दवाओं के नाम है, वे अस्पताल से नहीं दी जाती है। फिर भी अस्पताल के सामने की घटना है तो इस संबंध में मंगलवार जांच कराई जाएगी। उल्लेखनीय है कि पूर्व में इस अस्पताल के करीब डैम में दवाओं का जखीरा मिला था।

विदिशा से आये जीजा-साले ने फुसलाकर विवाहिता का किया अपहरण, मामला दर्ज

भोपाल नप्र। निशातपुरा पुलिस ने इलाके में रहने वाले व्यक्ति की शिकायत पर विदिशा में रहने वाले उसकी पत्नि के परिचित युवक और युवक के जीजा के खिलाफ अपहरण का मामला दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार फरियादी अनस खान (परिवर्तित नाम) ने पुलिस को शिकायत करते हुए बताया था, कि उसकी पत्नी बीती 21 जुलाई को बिना बताये घर से कहीं चली गई थी। उसकी शिकायत पर पुलिस ने गुमशुदगी का प्रकरण दर्ज किया था। तीन दिन बाद 24 जुलाई को अनस की पत्नी वापस घर लौट आई पति पत्नी को लेकर थाने पहुंचा। पत्नि ने पुलिस को बताया की वह मूल रुप से विदिशा की रहने वाली है।

करीब चार साल पहले उसने निशावपुरा में रहने वाले युवक से शादी थी, दोनो का एक बच्चा भी है। वो अपने पति के साथ फिजा कॉलोनी में रहती है। महिला ने आगे बताया की विदिशा में उसके घर के पास ही रहने वाले विकास नामय युवक से उसकी दोस्ती थी। शादी के बाद भी उनके बीच बातचीत होती रहती थी। आरोप है कि 21 जुलाई को विकास भोपाल आया और उसने उसे मिलने के लिये रेल्वे स्टेशन पर बुलाया। इस दौरान उसका जीजा कैलाश भी उसके साथ था। मुलाकात होने पर विकास ने उसे पुरानी दोस्ती होने का दबाव बनाते हुए साथ में घूमने चलने को कहा। पीड़ीता ने जब उसके साथ घूमने जाने से इंकार किया तब आरोपी उसे डरा-धमकाकर उसका अपहरण कर अपने साथ ट्रेन से अजमेंर ले गये। वहॉ विकास ने उससे कहा कि वो उससे शादी करना चाहता है, वहीं कैलाश उस पर अपने साले विकास के साथ शादी करने का दबाव बनाने लगा। पीड़ीता ने अपनी जान बचाने के लिये उससे कहा कि वो भोपाल जाने के बाद ही कोई फैसला लेगी। बाद में भोपाल आने पर महिला अपने पति के पास पहुंची और उसे सारी बात बताई। इसके बाद पति उसे लेकर थाने जा पहुंचा। शिकायत मिलने पर पुलिस ने जीजा साले के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जिन्हें कोर्ट में पेश कर जेल भेजने की तैयारी है।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल का अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में आयोजित सम्मेलन में शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया गया।

देश के 20 राज्यों के सरकारी कर्मचारियों का वेतन मप्र से अधिक

मध्यप्रदेश के सरकारी कर्मचारियों का वेतन कई राज्यों से कम

भोपाल नप्र। मप्र के सरकारी कर्मचारियों का वेतन कई राज्यों से कम है। हम बात कर रहे हैं देश भक्ति जनसेवा...जैसे ध्येय वाक्यों को चरितार्थ करने वाले प्रदेश के खाकी वर्दीधारियों की जोकि कम वेतन से परेशान हैं। आरक्षक से निरीक्षक तक एक लाख पुलिस वाले संगठन नहीं बना सकते इसलिए संघर्ष कर रहे हैं। हाल ये है कि इन वर्दीधारियों को 24 घंटे ड्यूटी करने के बाद भी साप्ताहिक अवकाश तक नहीं मिल रहा।

आरक्षक से लेकर निरीक्षक यानी इंस्पेक्टर तक एक लाख से अधिक पुलिस वाले हैं, जिनकी वेतन विसंगति, साप्ताहिक अवकाश समेत बीसियों समस्याओं के निराकरण के लिए किसी सरकार ने ईमानदारी से ध्यान नहीं दिया। चुनावी साल में अब पुलिसकर्मियों की इन्हीं मांगों के लिए राजधानी में 28 जुलाई को हल्ला बोल होने जा रहा है। पुलिसकर्मियों के लिए काम करने वाले बबलू यादव ने मोर्चा संभाल रखा है। दरअसल, पुलिस के लिए किसी तरह के संगठन बनाने का प्रावधान नहीं होने की वजह से पुलिस का जमीनी कैडर पर्दे के पीछे रहकर बबलू को समर्थन कर रहा है। इतना ही नहीं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ से मिलकर कांग्रेस पार्टी के घोषणा पत्र (वचन पत्र) में पुलिस आरक्षकों की मांगों को भी शामिल करवाने और सरकार बनने पर उन्हें लागू करने जैसी कवायदें भी हो रही हैं।

आठ घंटे की ड्यूटी की मांग

इंदौर और भोपाल में पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू कर दी गई, लेकिन कर्मचारियों को लाभ नहीं दिया। इनकी मांग है कि जिला बल में आठ घंटे की ड्यूटी का प्रावधान लागू किया जाए। आरक्षक से लेकर उप-निरीक्षक तक पदोन्नति हो। वहीं जेल प्रहरी को पुलिस की तरह 13वां महीने का अतिरिक्त वेतन दिया जाए। होमगार्ड कर्मचारियों की ट्रांसफर नीति 2016 को संशोधित कर नई नीति लागू की जाए। पुलिसकर्मियों के लिए संघर्ष करने वाले बबलू यादव बताते हैं कि पुलिसकर्मी अपनी मांगों के लिए न तो संगठन बना सकते हैं और न ही हड़ताल पर जा सकते हैं। यही वजह है कि विभाग के कर्मचारियों की मांग विधानसभा पटल पर भी नहीं पहुंच पाती। देश के अन्य राज्य तो दूर सीमावर्ती प्रदेशों को ही देखें तो राज्य के पुलिसकर्मियों का वेतन बहुत कम है।

13 मांगों का निराकरण चाहते हैं पुलिसकर्मी

देश के 35 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में से 20 बड़े राज्यों के पुलिसकर्मियों (आरक्षक वर्ग) की तुलना करें तो मध्य प्रदेश में वेतन सबसे कम है। प्रदेश के पुलिसकर्मियों का वेतन ग्रेड अभी 1900 है, जिसे वे 2800 करवाना चाहते हैं। फिलहाल इतना ग्रेड पे तेलंगाना राज्य के पुलिस कर्मचारियों का है। जबकि पुलिसिंग के लिहाज से देखें तो क्षेत्रफल में हमारा प्रदेश देश का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। इसी तरह से जनसंख्या की बात करें तो उस दृष्टिकोण से भी अपना प्रदेश पांचवां सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश के पुलिसकर्मी चाहते हैं कि उन्हें गृह जिले में तैनाती दी जाए। आवास भत्ता 5000 रुपए मासिक करवाना चाहते हैं। इसके अलावा बदलते समय के साथ साइकिल भत्ता अप्रासंगिक हो चुका है, जिसे खत्म कर मोटरसाइकिल भत्ते में बदला जाए। ग्रेड पे बढ़ाकर 2800 किया जाए। इसी तरह से अन्य सभी भत्ते भी आज के दौर के हिसाब से बढ़ाए जाएं। मध्य प्रदेश शस्त्र बल या एसएएफ का विलय पुलिस जिला बल में किया जाए। ट्रेड आरक्षक जीडी में संविलियन भी होना चाहिए। प्रदेश में पुलिस के लिए साप्ताहिक अवकाश का प्रावधान भी नहीं है।

भारत के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए वेस्टइंडीज टीम घोषित

सेंट जॉन्स। वेस्टइंडीज ने भारत के खिलाफ 27 जुलाई से केंसिंग्टन ओवल में शुरू होने वाली आगामी तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के लिए राष्ट्रीय टीम की घोषणा कर दी है। टीम में स्टार बल्लेबाज शिमरोन हेटमायर और तेज गेंदबाज ओशेन थॉमस की वापसी हुई है।
हेटमायर लगभग एक साल से कैरेबियाई टीम के लिए नहीं खेले हैं, लेकिन इंडियन प्रीमियर लीग में राजस्थान रॉयल्स के साथ अच्छे प्रदर्शन के कारण उनकी वापसी हुई है, जिसमें उन्होंने 13 पारियों में कुल 299 रन बनाए थे। बाएं हाथ के बल्लेबाज ने दो साल में वेस्टइंडीज के लिए एकदिवसीय मैच नहीं खेला है, हेटमायर की आखिरी उपस्थिति जुलाई 2021 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 50 ओवर की प्रतियोगिता में थी।

शिमरोन हेटमायर, ओशाने थॉमस की वापसी

इस बीच, तेज गेंदबाज थॉमस, जो आखिरी बार दिसंबर 2021 में वेस्टइंडीज के लिए खेले थे और हाल के दिनों में फिटनेस के मुद्दों के कारण टीम से बाहर हैं, को भी 15-खिलाड़ियों की टीम में नामित किया गया है। दूसरी ओर, तेज गेंदबाज जेडन सील्स और लेग स्पिनर यानिक कारिया को सर्जरी से पुनर्वास के बाद शामिल किया गया है, जबकि बाएं हाथ के स्पिनर गुडाकेश मोती भी टीम में शामिल हैं, जो चोट से उबर चुके हैं। मुख्य चयनकर्ता और वेस्टइंडीज के महान खिलाड़ी डेसमंड हेन्स भारत के खिलाफ वनडे सीरीज को लेकर उत्साहित हैं और उन्हें भरोसा है कि हेटमायर और थॉमस अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। उन्होंने कहा, ह्लहम ओशेन और शिमरोन का समूह में वापस स्वागत करते हैं। उन्होंने कहा, ओशेन गति लाता है और नई गें से संभावित विकेट लेने वाला गेंदबाज है। शिमरोन की बल्लेबाजी की शैली विशेष रूप से पारी के मध्य चरण में बहुत कुछ प्रदान करेगी और वह एक संभावित 'फिनिशर' भी हैं। नियमित निकोलस पूरन और जेसन होल्डर श्रृंखला के लिए अनुपलब्ध हैं, विकेटकीपर बल्लेबाज शाई होप को एक बार फिर तीन मैचों के लिए कप्तान बनाया गया है। केंसिंग्टन ओवल 27 जुलाई और 29 जुलाई को वनडे सीरीज के पहले दो मैचों की मेजबानी करेगा। इसके बाद टीमें 1 अगस्त को ब्रायन लारा क्रिकेट अकादमी में तीसरे और अंतिम वनडे के लिए त्रिनिदाद जाएंगी।
वेस्टइंडीज की टीम इस प्रकार है: शाई होप (कप्तान), रोवमैन पॉवेल (उप-कप्तान), एलिक अथानाजे, यानिक कारिया, कीसी कार्टी, डोमिनिक ड्रेक्स, शिमरोन हेटमायर, अल्जारी जोसेफ, ब्रैंडन किंग, काइल मेयर्स, गुडाकेश मोती, जेडेन सील्स, रोमारियो शेफर्ड, केविन सिंक्लेयर, ओशाने थॉमस।

कोहली और रोहित का वेस्टइंडीज के खिलाफ रन बनाने का क्या फायदा चयनकर्ता नहीं चाहते युवा खिलाड़ी चुनौती बनें : गावस्कर

वेस्टइंडीज और भारत के बीच क्वींस पार्क ओवल में खेला गया दूसरा टेस्ट सोमवार को पांचवें और आखिरी दिन बारिश की भेंट चढ़ने के बाद ड्रॉ रहा। डोमिनिका में पारी की जीत के बाद भारत ने सीरीज 1-0 से अपने नाम की। यह कैरेबियाई धरती पर भारत की लगातार 5वीं सीरीज जीत थी। टीम यहां पिछले 21 वर्षों में वेस्टइंडीज से कोई टेस्ट नहीं हारी है। हालांकि, लिटिल मास्टर सुनील गावस्कर ने फिर सीनियर बल्लेबाज विराट कोहली और रोहित शर्मा के चयन के पीछे और सीरीज में दोनों के रन बनाने के उद्देश्य पर सवाल उठाया। गावस्कर ने मिड डे के लिए अपने कॉलम में युवाओं की तुलना में बड़े नामों को अधिक समर्थन मिलने पर भी नाखुशी व्यक्त की।

युवाओं को आजमाना बेहतर नहीं होता?

सुनील गावस्कर ने मिड डे के लिए अपने कॉलम में लिखा, वेस्टइंडीज के इस आक्रमण के खिलाफ रोहित और कोहली का रन बनाना यह सवाल पैदा करते हैं कि चयनकर्ताओं ने ऐसा क्या सीखा जो उन्हें पहले से नहीं पता था? क्या यह बेहतर नहीं होता कि कुछ युवाओं को आजमाया जाए और देखा जाए कि वे टेस्ट क्रिकेट में कैसा प्रदर्शन करते हैं। क्या चयनकर्ता नहीं चाहते कि युवा खिलाड़ी बड़े नामों को किसी भी तरह की चुनौती पेश करें।

उन्होंने सवाल किया कि क्या चयनकर्ता नहीं चाहते युवा खिलाड़ी बड़े खिलाड़ियों को चैलेंज दें? क्या चयन समिति के नए अध्यक्ष अजीत अगरकर के नेतृत्व में दृष्टिकोण में कोई बदलाव आएगा। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से हार के बाद से ही गावस्कर टीम इंडिया की आलोचना कर रहे हैं। सुनील गावस्कर ने आगे कहा, ह्ल अब जब अजीत अगरकर चयन समिति के अध्यक्ष बन गए हैं तो देखते हैं कि क्या भविष्य के लिए टीम बनाने के दृष्टिकोण में कोई बदलाव होता है? या फिर वही पुरानी कहानी जारी रहती है ह्व गावस्कर इससे पहले रोहित शर्मा की कप्तानी पर निराशा जाहिर कर चुके हैं। साथ ही उन्होंने राहुल द्रविड़ समेत कोचिंग स्टाफ जवाबदेही तय करने की मांग की थी।

जापान ओपन 2023: श्रीकांत प्री क्वार्टरफाइनल में, आकर्षी कश्यप बाहर

टोक्यो। शीर्ष भारतीय खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत ने मंगलवार को यहां चल रहे जापान ओपन 2023 बैडमिंटन टूनामेंट में चीनी ताइपे के चाउ टीएन चेन को हराकर 16वें राउंड में प्रवेश किया। पूर्व विश्व नं. नंबर 1 श्रीकांत ने 43 मिनट तक चले राउंड 32 के मुकाबले में चाउ टीएन चेन को 21-13, 21-13 से हराया। विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता श्रीकांत का गुरुवार को राउंड 16 में हमवतन एचएस प्रणय और ऑल इंग्लैंड 2023 चैंपियन चीन के ली शी फेंग के बीच होने वाले मैच के विजेता से मुकाबला होगा। हालाँकि, आकर्षी कश्यप महिला एकल के शुरूआती दौर में शीर्ष वरीयता प्राप्त अकाने यामागुची से 17-21, 17-21 से हार गईं। मिश्रित युगल में रोहन कपूर और सिक्की रेड्डी को चीनी ताइपे के ये होंग वेई और ली चिया सीन से 21-18, 9-21, 18-21 से हार का सामना करना पड़ा।

एशियाई खेलों के लिए पाकिस्तानी महिला टीम की घोषणा, अनूषा, शवाल नए चेहरे

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने मंगलवार को चीन के हांगझोउ में होने वाले आगामी एशियाई खेलों के लिए राष्ट्रीय महिला क्रिकेट टीम की घोषणा कर दी है। टीम में बाएं हाथ की स्पिनर अनूशा नासिर और दाएं हाथ की बल्लेबाज शवाल जुल्फिकार को पहली बार शामिल किया गया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की मीडिया विज्ञप्ति के अनुसार, अनूशा और शवाल को आईसीसी अंडर19 महिला टी20 विश्व कप और इमर्जिंग महिला टीम एशिया कप में उनके अच्छे प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया है। 15 खिलाड़ियों की टीम में डायना बेग भी शामिल हैं जो इस साल जनवरी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे और अंतिम एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में उंगली की चोट से उबरने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी कर रही हैं। पाकिस्तान की महिला टीम ने 2010 में ग्वांगझू, चीन और 2014 में इंचियोन, दक्षिण कोरिया में आयोजित पिछले दो संस्करणों में स्वर्ण पदक जीते हैं, और जब वे इस साल के आयोजन में भाग लेंगी तो उनका लक्ष्य हैट्रिक बनाना होगा, जो 19 से 26 सितंबर तक होने वाला है। यह आयोजन टी20 प्रारूप में खेला जाएगा। पीसीबी ने कहा, ₹सलीम जाफर, मुख्य कोच मार्क कोल्स और कप्तान निदा डार की अगुवाई वाली महिला चयन समिति के बीच विचार-विमर्श के बाद 15 सदस्यीय टीम को अंतिम रूप दिया गया। एशियाई खेलों से पहले, पाकिस्तान की महिलाएं 1 से 14 सितंबर तक कराची में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन टी20ई और तीन वनडे (आईसीसी महिला चैंपियनशिप 2022-25 का हिस्सा) वाली घरेलू श्रृंखला में भाग लेंगी। द्विपक्षीय श्रृंखला के लिए टीम की घोषणा उचित समय पर की जाएगी। इस बीच, पूर्व कप्तान बिस्माह मारूफ ने एशियाई खेलों से हटने का फैसला किया है क्योंकि आयोजन के नियम और विनियम एथलीटों को अपने बच्चों को ले जाने की अनुमति नहीं देते हैं। पीसीबी ने यह भी उल्लेख किया कि आईसीसी महिला टी20 विश्व कप में भाग लेने वाली आयशा नसीम ने खेल से संन्यास लेने की इच्छा व्यक्त की, जिसे बोर्ड ने स्वीकार कर लिया। मुख्य चयनकर्ता सलीम जाफर ने कहा, ₹एशियाई खेलों के लिए हमारी टीम पाकिस्तान में महिला क्रिकेट के भविष्य का प्रतिनिधित्व करती है। उभरती प्रतिभाओं और अनुभवी प्रचारकों के मिश्रण के साथ, मुझे उम्मीद है कि खिलाड़ी इस आयोजन में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने कहा, ₹एशियाई खेल हमारे युवा खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं। हमने एक ऐसी टीम तैयार करने के लिए एक रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाया है जो उस स्थान की परिस्थितियों के अनुरूप होगी जहां मैच होंगे। एक ठोस टीम बनाने के लिए प्रत्येक खिलाड़ी की ताकत और खेल की परिस्थितियों के अनुकूल अनुकूलन क्षमता का भी आकलन किया गया है। महिला क्रिकेट की प्रमुख तानिया मलिक ने कहा, ₹एशियाई खेलों का हिस्सा बनना हमारी टीम के लिए एक उत्साहजनक अनुभव है। यह सिर्फ प्रतियोगिता के बारे में नहीं है; यह सौहार्द, खेल भावना और गर्व के साथ देश का प्रतिनिधित्व करने के बारे में है। हमारे खिलाड़ियों ने अविश्वसनीय समर्पण और कौशल दिखाया है, और अब उनके पास तीसरी बार प्रतिष्ठित खिताब जीतकर इतिहास बनाने का सुनहरा मौका है। उन्होंने कहा, ₹इस प्रतियोगिता के लिए बिस्माह मारूफ की सेवाएं न लेना टीम के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि नियमों के कारण वह अपनी नवजात बेटी के साथ खेल गांव में नहीं जा पाएंगी।

हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी चेन्नई 2023 के लिए 18 सदस्यीय भारतीय पुरुष हॉकी टीम घोषित

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी चेन्नई 2023 के लिए 18 सदस्यीय भारतीय पुरुष हॉकी टीम की घोषणा कर दी है। एशियन चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजन 3 अगस्त से 12 अगस्त तक चेन्नई के मेयर राधाकृष्णन स्टेडियम में किया जाएगा। टूर्नामेंट के पूल चरण के दौरान भारत का सामना कोरिया, मलेशिया, पाकिस्तान, जापान और चीन से होगा। हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी चेन्नई 2023 महत्वपूर्ण हांगझोउ एशियाई खेलों 2023 के लिए तैयारी के रूप में भी काम करेगा। टीम का नेतृत्व शीर्ष ड्रैगफ्लिकर और डिफेंडर हरमनप्रीत सिंह करेंगे, जबकि मिडफील्डर हार्दिक सिंह टीम के उपकप्तान होंगे। पीआर श्रीजेश और कृष्ण बहादुर पाठक को गोलकीपर के रूप में नामित किया गया है। टीम चयन पर मुख्य कोच क्रेग फुल्टन ने कहा, हमने सावधानीपूर्वक एक ऐसी टीम चुनी है जिसमें आगे बढ़ने और हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी चेन्नई 2023 में अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता है।
चेन्नई में आगामी एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए चुनी गई भारतीय पुरुष टीम में कुछ युवाओं और अनुभव का मिश्रण है। यह टीम के लिए एक रोमांचक चरण है क्योंकि हम स्पेन में 100वीं वर्षगांठ स्पेनिश हॉकी फेडरेशन-अंतरराष्ट्रीय टूनार्मेंट शुरू कर रहे हैं और इस टूनार्मेंट के बाद हीरो एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी चेन्नई 2023 में घरेलू मैदान पर खेलने के लिए सीधे चेन्नई के लिए उड़ान भरेंगे। चुने गए खिलाड़ी इस अवसर से उत्साहित हैं और अपने उत्साही घरेलू प्रशंसकों के सामने खेलने के लिए उत्सुक हैं।

भारतीय टीम इस प्रकार है

गोलकीपर- पीआर श्रीजेश, कृष्ण बहादुर पाठक।
डिफेंडर- जरमनप्रीत सिंह, सुमित, जुगराज सिंह, हरमनप्रीत सिंह (कप्तान), वरुण कुमार, अमित रोहिदास।
मिडफील्डर- हार्दिक सिंह (उपकप्तान), विवेक सागर प्रसाद, मनप्रीत सिंह, नीलकंठ शर्मा, शमशेर सिंह।
फॉरवर्ड- आकाशदीप सिंह, मनदीप सिंह, गुरजंत सिंह, सुखजीत सिंह, एस कार्थी।

सऊदी के क्लब का एम्बाप्पे को रिकॉर्ड ऑफर:

अल हिलाल फ्रेंच प्लेयर के लिए 3 हजार करोड़ रुपए देने को तैयार

लंदन। फ्रांस के स्टार प्लेयर किलियन एम्बाप्पे के लिए सऊदी अरब के क्लब अल-हिलाल ने वर्ल्ड रिकॉर्ड ऑफर दिया है। सऊदी अरब के क्लब अल-हिलाल ने एम्बाप्पे को अपने क्लब में शामिल करने के लिए पीएसजी को 300 मिलियन यूरो यानी 3 हजार करोड़ रुपए देने का ऑफर दिया है। एम्बाप्पे इस समय फ्रांस के क्लब पेरिस सैंट जर्मन (पीएसजी) का हिस्सा है।
पीएसजी ने एम्बाप्पे को क्लब के साथ बातचीत करने की परमिशन दी है। अगर एम्बाप्पे और सऊदी के क्लब के बीच यह डील होती है तो यह एक रिकॉर्ड ट्रांसफर फीस होगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अल-हिलाल ने ग्लोबल स्टार लियोनल मेसी को भी बड़ी राशि के सैलरी पर अपनी टीम में शामिल करने की पेशकश की थी। हालांकि, मेसी सऊदी नहीं गए और अमेरिकी क्लब इंटर मयामी में शामिल हो गए। पूर्व फुटबॉलर डेविड बेकहम अपने करियर के लास्ट फेज में इस क्लब से खेल चुके हैं। उन्होंने इस क्लब के ऑनर-शिप राइट्स भी खरीदे। पिछले कुछ समय ने पीएसजी क्लब और एम्बाप्पे के बीच विवाद की स्थिति बनी हुई है। दरअसल, ढरञ्ज और एम्बाप्पे के बीच 2024 तक का कॉन्ट्रैक्ट है। अगर एम्बाप्पे 2024 में न क्लब छोड़ते है तो वह फ्री एजेंट बन जाएंगे। इस स्थिति में पीएसजी को एक भी पैसा नहीं मिलेगा। इस हालत में ढरञ्ज ने एम्बाप्पे को अपना कॉन्ट्रैक्ट आगे बढ़ाने की मांग की थी, जिसे एम्बाप्पे ने ठुकरा दिया था। अब ढरञ्ज ने एम्बाप्पे का नाम ट्रांसफर लिस्ट में कर दिया है, यानी PSG एम्बाप्पे के लिए दूसरे क्लब से बिड मांग रहा है।

स्पाइसजेट को मिली बड़ी राहत, डीजीसीए ने बढ़ी हुई निगरानी व्यवस्था हटाई

नई दिल्ली। सस्ती विमानन सेवा मुहैया कराने वाली एयरलाइन कंपनी स्पाइसजेट को बड़ी राहत मिली है। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने स्पाइसजेट की बढ़ी हुई निगरानी व्यवस्था हटा दी है। दरअसल, प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर रही स्पाइसजेट को हाल ही में बढ़ी हुई निगरानी में रखा गया था। आधिकारिक सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि डीजीसीए ने स्पाइसजेट की बढ़ी हुई निगरानी व्यवस्था को हटा दिया है। डीजीसीए ने स्पाइस बोइंग 737 और क्यू-400 बेड़े में 11 स्थानों पर 51 स्पॉट चेक करने के बाद यह फैसला लिया है। इस दौरान कुल 23 विमानों का निरीक्षण किया गया और डीजीसीए की टीमों ने 95 बार अवलोकन किए। एयरलाइन कंपनी ने डीजीसीए के दिशा-निर्देशों के मुताबिक उचित कार्यवाही की, जिसके बाद स्पाइसजेट को डीजीसीए की बढ़ी हुई निगरानी व्यवस्था से हटा दिया गया है। गौरतलब है कि विमान नियामक डीजीसीए ने अपर्याप्त रखरखाव और पिछले साल मानसून के दौरान हुई घटनाओं के मद्देनजर स्पाइसजेट को अपनी बढ़ी हुई निगरानी में रखा था।

80 लाख लोगों को मिला इनकम टैक्स रिफंड

नई दिल्ली। वित्त वर्ष 2022-23 के लिए अब तक 4 करोड़ से ज्यादा इनकम टैक्स रिटर्न यानी आईटीआर दाखिल हो चुके हैं। आईटीआर भरने की आखिरी तारीख 31 जुलाई है। कई करदाताओं ने अभी तक अपना रिटर्न दाखिल नहीं किया है। हालांकि, जिन लोगों ने पहले ही अपना क्ळ्फ फाइल कर दिया है, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने उन लोगों के बैंक अकाउंट में रिफंड वापस भेजना शुरू कर दिया है। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के चेयरमैन नितिन गुप्ता ने सोमवार को बताया कि अब तक 80 लाख करदाताओं को रिफंड जारी किए हैं। आईटीआर फाइल करने के 15-20 दिनों के अंदर इनकम टैक्स डिपार्टमेंट रिफंड कर देता है। ऐसे में अगर आपने क्ळ्फ फाइल कर दिया है और आप का भी रिफंड बन रहा है तो आप घर बैठे रिफंड का स्टेटस चेक कर सकते हैं। उअ अभय शर्मा (पूर्व अध्यक्ष इंदौर चार्टर्ड अकाउंटेंट शाखा) कहते हैं कि हाल ही में कई बैंकों को दूसरे बैंकों में मर्ज किया गया है। ऐसे में कई बैंकों के IFSC कोड बदल गए हैं। अगर आपने इनकम टैक्स डिपार्टमेंट में अपने बैंक अकाउंट की जानकारी अपडेट नहीं की है तो आपका रिफंड अटक सकता है। जिस बैंक खाते में इनकम टैक्स रिफंड आना है उस बैंक खाते को प्री-वैलिडेट (पहले से सत्यापित) करा लें।

कैट और मेटा ने 'व्हाट्सएप से व्यापार' साझेदारी का किया ऐलान

मुंबई/नई दिल्ली। देशभर में छोटे व्यवसायों को सशक्त बनाने के लिए कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) और मेटा के स्वामित्व वाले व्हाट्सएप ने अपनी पार्टनरशिप में 10 मिलियन व्यापारियों को डिजिटल रूप से प्रशिक्षित और कुशल बनाने का संयुक्त रूप से ऐलान किया है। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने सोमवार को समझौते के अवसर पर कहा कि इस साझेदारी का लक्ष्य देश के सभी 29 राज्यों में 11 भारतीय भाषाओं में हाइपर-स्थानीय डिजिटल प्रशिक्षण के साथ व्यवसायों के लिए विकास के अवसरों को उजागर करने के लिए डिजिटलीकरण प्रयासों को अंतिम व्यापारी तक पहुंचाना है। प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि हम 'व्हाट्सएप से व्यापार' कार्यक्रम पर मेटा के साथ अपनी साझेदारी का विस्तार करने के लिए उत्साहित हैं, जिसे भारत के 29 राज्यों में 10 मिलियन व्यापारियों को कौशल प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। कैट महामंत्री ने कहा कि भारत में 40 हजार व्यापारी संगठनों से जुड़े करीब 8 करोड़ व्यापारियों के अपने व्यापक नेटवर्क का लाभ उठाते हुए कैट व्यवसायों को उनके स्टोरफ्रंट को डिजिटल बनाने और उनके 'डिजिटल' निर्माण में मदद करने के लिए आवश्यक ज्ञान से लैस करने के लिए व्यापक डिजिटल और कौशल प्रशिक्षण मुहैया कराने के लिए डिजाइन कार्यशालाओं की एक श्रृंखला देश भर में आयोजित करेगा।

अनूपपुर व कोतमा महाविद्यालय में नव मतदाताओं से पंजीयन कराने संवाद कर अधिकारियों ने किया आव्हान

फतवा समाचार ◈ अनूपपुर

शासकीय अग्रणी तुलसी महाविद्यालय अनुपपुर में मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत एसडीएम अनूपपुर सुश्री दीपखिखा भगत तथा तहसीलदार श्री आदित्य द्विवेदी ने तथा कोतमा महाविद्यालय में एसडीएम श्री मायाराम कोल ने विद्यार्थियों से रू-ब-रू होकर संवाद किया और नव मतदाताओं से मतदाता सूची में स्वयं का पंजीयन कराने और अपने परिवार या पड़ोस के ऐसे सदस्य जिनका अभी तक मतदाता सूची में पंजीयन नही है और उनकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं, तो उन्हें पंजीयन करवाकर मतदाता पहचान पत्र बनवाने के साथ ही सभी को अनिवार्य रूप से मतदान के लिए प्रेरित करने का आव्हान किया। इस अवसर पर अधिकारियों ने मतदाता सूची में पंजीयन कराने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया की जानकारी भी दी

शहर की खराब सड़कों पर बिफरीं कलेक्टर

फतवा समाचार ◈ शहडोल

सीएमओ को दो टूक; आप रुचि लेकर सड़कें ठीक कराइए, मैं खुद निरीक्षण कर गुणवत्ता परखूंगी

शहडोल नगर की खराब सड़कों की हालत को देखते हुए कलेक्टर वंदना वैद्य ने नगर पालिका के सीएमओ को फटकार लगाई है। उन्होंने टीएल की बैठक में दो टूक कहा कि शहडोल नगर की सड़कों की स्थिति काफी जर्जर हालत में है। सीएमओ खुद सड़कों पर विशेष ध्यान देते हुए मरम्मत कराएं और मरम्मत के बाद मैं खुद सड़कों का निरीक्षण करूंगी, गुणवत्ता देखूंगी। इस पर नगरपालिका के सीएमओ ने कहा कि जल्द मरम्मत का कार्य किया जाएगा। कलेक्ट्रेट कार्यालय के विराट सभागार में कलेक्टर समय-सीमा की बैठक में अधिकारियों को निर्देशित कर रहीं थीं। बैठक में कलेक्टर ने खाद्यान्न उठाव एवं वितरण प्रणाली की समीक्षा करते हुए जिला आपूर्ति नियंत्रक को निर्देशित किया कि खाद्यान्न उठाव एवं वितरण प्रणाली पर निगरानी रखी जाए। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की कोई भी शिकायत खाद्यान्न संबंधी नहीं आना चाहिए।

मृतकों ने नाम काटे तत्काल काटे जाएं

बैठक में कलेक्टर ने राशन कार्ड से मृत हितग्राहियों के नाम हटाने की जानकारी प्राप्त करते हुए मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायतों को निर्देशित किया कि जो व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी है। उनके नाम राशन कार्ड से हटाने की कार्यवाही सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि अगर कोई ग्राम पंचायत में सचिव इस कार्य में लापरवाही बरत रहा है, उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई किया जाए। अगर कोई व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी है, उसके नाम पर किसी और को खाद्यान्न वितरण किया जा रहा है, इस पर भी संबंधित के विरुद्ध कार्रवाई की जाए। बैठक में कलेक्टर ने लाडली बहना योजना की समीक्षा करते हुए जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग को निर्देशित करते हुए कहा कि लाडली बहना योजना के अंतर्गत 21 से 23 वर्ष की लाडली बहना भी पात्र हैं। जिनका 25 जुलाई से फार्म भराया जाएगा। उन्होंने कहा कि महिलाओं को डीबीटी कार्य एवं ईकेवाईसी में किसी प्रकार की असुविधा का सामना ना करना पड़े, इसकी बेहतर व्यवस्था बनाई जाए।

कक्षा 5वीं और 8वीं का परिणाम शत-प्रतिशत हो, हर बच्चे को भेजें स्कूल : जिपं सीईओ

फतवा समाचार ◈ शहडोल

कलेक्ट्रेट सभागार में जिला पंचायत के सीईओ हिमांशु चंद्र ने जिला शिक्षा केंद्र के कार्यों की समीक्षा बैठक ली। इस दौरान सीईओ हिमांशु ने कहा कि बच्चों का भविष्य संवारने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। जिले के सभी शिक्षक अपने अपने दायित्व का निर्वहन पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ करें। उन्होंने कहा कि आपके स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थी अगर किसी नई मुकाम पर पहुंच जाते हैं तो वह सदा ही अपने शिक्षकों का नाम बड़े आदर एवं सम्मान के साथ लेते हैं। जिला पंचायत सीईओ ने जिला शिक्षा केंद्र के अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी अधिकारी और संकुल प्राचार्य समन्वय स्थापित करते हुए कार्य संपादित करें। कक्षा पांचवी एवं आठवीं के विद्यार्थियों का शत-प्रतिशत रिजल्ट हो। किसी का भी रिजल्ट बिगड़ना नहीं चाहिए तथा सभी का रिजल्ट में बेहतर प्रदर्शन होना चाहिए। सीईओ ने गणवेश के संबंध में जानकारी लेते हुए गुणवत्ता के संबंध में संकुल प्राचार्य से पूछा। जिस पर संकुल प्राचार्य ने बताया कि गणवेश की गुणवत्ता बेहतर है। इस दौरान सीईओ ने कहा कि अगर गणवेश की गुणवत्ता बेहतर नहीं है तो गणवेश वापस कर दिया जाए तथा संबंधित से गुणवत्तायुक्त गणवेश लिया जाए। बैठक में सीईओ ने एनरोलमेंट नंबर के संबंध में जानकारी प्राप्त की जिस पर डीपीसी ने बताया कि समग्र आईडी पंचायत से बनाया जा रहा है लेकिन उसमें कई प्रकार की तकनीकी गड़बड़ी हो रही है। जिस पर सीईओ ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि 31 जुलाई के अंदर समस्त समग्र आईडी बनवाना सुनिश्चित करें। बैठक में सीईओ ने कहा कि हर बच्चा स्कूल जाए अगर कोई बच्चा स्कूल नहीं जा रहा है तो उसके अभिभावकों से मिलकर चर्चा करें तथा उसे स्कूल जाने के लिए प्रेरित करें। बैठक में सीईओ ने सभी बीआरसी को निर्देशित किया कि मतदान केंद्रों का सर्वे कराकर लिस्ट तैयार करें और लिस्ट को मेरे कार्यालय 7 दिन के अंदर प्रस्तुत करें। इस दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत में मध्यान भोजन के संबंध में भी जानकारी प्राप्त की।

विधानसभा आम निर्वाचन 2023 के सफल संचालन हेतु नोडल एवं सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त

फतवा समाचार ◈ अनूपपुर

अनूपपुर 24 जुलाई 2023/ विधानसभा आम निर्वाचन 2023 के सफल संचालन हेतु विभिन्न निर्वाचन कार्यों को निष्पादित किए जाने के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आशीष वशिष्ठ ने नोडल अधिकारियों एवं सहायक नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की है। जनशक्ति प्रबंधन एवं माइक्रो ऑब्जर्वर हेतु जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभय सिंह ओहरिया को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जिला सूचना विज्ञान अधिकारी रानी गलकाटे, जिला पंचायत के परियोजना अधिकारी डॉ. उमेश द्विवेदी, शास.प्रा.शा. बालक बस्ती अनूपपुर के सहायक शिक्षक श्री संजय निगम, जनपद शिक्षा केन्द्र अनूपपुर के डाटा इन्ट्री ऑपरेटर श्री दीपक रोहित, समग्र संयोजक श्री स्वतंत्र केशरवानी, जिला पंचायत के वाटर शेड के तकनीकी विशेषज्ञ श्री रामनाथ कोरी तथा जिला पंचायत के सहा. वर्ग-3 श्री अशोक द्विवेदी की ड्यिटी लगाई गई है। दिव्यांगजन/स्वीप हेतु जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभय सिंह ओहरिया को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अशोक अवधिया, सामाजिक न्याय एवं निःशक्तजन कल्याण विभाग के उप संचालक श्री के.के. सोनी, महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री विनोद परस्ते, महिला एवं बाल विकास विभाग की सहायक संचालक श्रीमती मंजूषा शर्मा, जिला पंचायत के वाटर शेड के तकनीकी विशेषज्ञ श्री रामनाथ कोरी, जिले के सभी जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों तथा जिले के सभी नगरीय निकायों के मुख्य नगरपालिका अधिकारियों की ड्यिटी लगाई गई है। एएमएफ एवं मतदान केन्द्र हेतु जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभय सिंह ओहरिया को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जनजातीय कार्य विभाग के जिला संयोजक श्री संतोष बाजपेयी, लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री डी.के. कोस्टा, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी संभाग अनूपपुर के कार्यपालन यंत्री श्री हरिजीवन सिंह, विद्युत विभाग के कार्यपालन अभियंता श्री जी.पी. गोस्वामी, सर्व षिक्षा अभियान के जिला परियोजना समन्वयक श्री हेमन्त खैरवाल, जिले के सभी जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों तथा जिले के सभी नगरीय निकायों के मुख्य नगरपालिका अधिकारियों की ड्यिटी लगाई गई है।

प्रशिक्षण प्रबंधन हेतु जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभय सिंह ओहरिया को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में सर्व शिक्षा अभियान के जिला परियोजना समन्वयक श्री हेमन्त खैरवाल, शासकीय हाईस्कूल परसवार के प्राचार्य श्री अजय कुमार जैन, शा.उ.मा.वि. कन्या अनूपपुर के वरिष्ठ अध्यापक डॉ. कौशलेन्द्र सिंह तथा जिला शिक्षा केन्द्र अनूपपुर के बीएसी श्री संतोष तिवारी की ड्यिटी लगाई गई है। सामग्री प्रबंधन हेतु डिप्टी कलेक्टर श्री दीपक पाण्डेय को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जनजातीय कार्य विभाग के जिला संयोजक श्री एस.के. बाजपेयी, अधीक्षक भू-अभिलेख श्री प्रदीप मोगरे तथा जिला निर्वाचन कार्यालय के सहा. वर्ग-3 श्री कमलेश तिवारी की ड्यिटी लगाई गई है। ईवीएम प्रबंधन हेतु संभागीय परियोजना लोक निर्माण (पीआईयू) के परियोजना यंत्री श्री अजीत कुमार सिंह को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जिला निर्वाचन कार्यालय के ईवीएम प्रभारी तथा शिक्षक श्री फूल सिंह तथा जिला निर्वाचन कार्यालय के ही डाटा इन्ट्री ऑपरेटर श्री रामसेवक चौधरी की ड्यिटी लगाई गई है।

परिवहन प्रबंधन हेतु संयुक्त कलेक्टर श्री अजीत तिर्की को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में आरटीओ श्री आर.एस. चिकवा, प्राथमिक शिक्षक श्री धीरेन्द्र चतुवेर्दी, जिला परिवहन कार्यालय के सहायक वर्ग-03 श्री पवन कुमार त्रिपाठी तथा कृषि विभाग के श्री देवेन्द्र सिंह की ड्यिटी लगाई गई है। डाक मतपत्र/ई.डी.सी. हेतु संयुक्त कलेक्टर श्री अजीत तिर्की को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में सर्व शिक्षा अभियान के जिला परियोजना समन्वयक श्री हेमन्त खैरवाल, जिला शिक्षा केन्द्र के सहायक परियोजना समन्वयक श्री ह्रदयकांत चतुवेर्दी तथा जिला शिक्षा केन्द्र के बीएसी श्री संतोष तिवारी की ड्यिटी लगाई गई है। परिचय पत्र हेतु जिला शिक्षा अधिकारी श्री तुलाराम आर्मो को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जिला षिक्षा अधिकारी कार्यालय के एपीसी श्री देवेश सिंह बघेल, सहायक वर्ग-2 श्री वीरेन्द्र राठौर तथा सहा. वर्ग-3 श्री प्रहलाद दास की ड्यिटी लगाई गई है। एमसीसी क्रियान्वयन हेतु संयुक्त कलेक्टर श्री अजीत तिर्की को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जिले के समस्त अनुभागों के अनुविभागीय अधिकारियों, समस्त तहसीलों के तहसीलदारों, समस्त अनुविभागीय अधिकारियों (पुलिस), समस्त जनपद पंचायतों के सीईओ, सभी थाना प्रभारियों, सभी मुख्य नगरपालिका अधिकारियों की ड्यिटी लगाई गई है। व्यय निगरानी हेतु जिला कोषालय अधिकारी श्री बी.एल. प्रजापति को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जिला पंचायत के लेखा अधिकारी श्री संतोष करचाम, सहायक कोषालय अधिकारी श्रीमती रीना कोल तथा सहायक कोषालय अधिकारी श्री अजीत शर्मा की ड्यिटी लगाई गई है।

पर्यवेक्षकों हेतु जिला आबकारी अधिकारी सुश्री सावित्री भगत को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में सहायक जिला आबकारी अधिकारी श्री के.के. उईके, एसडीओ आरईएस जैतहरी श्री अमरसाय राम, संभागीय परियोजना लोक निर्माण विभाग के सहायक यंत्री श्री प्रभात कुमार लोरिया की ड्यिटी लगाई गई है। कानून एवं व्यवस्था हेतु संयुक्त कलेक्टर श्री अजीत तिर्की को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में एसडीएम पुष्पराजगढ़ श्री विवेक के.वी., एसडीएम अनूपपुर श्रीमती दीपशिखा भगत, एसडीएम कोतमा श्री मायाराम कोल, अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) अनूपपुर सुश्री कीर्ति बघेल तथा अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) पुष्पराजगढ़ सुश्री सोनाली गुप्ता की ड्यिटी लगाई गई है। मतपत्र, डमी मतपत्र एवं स्ट्रांग रूम प्रबंधन हेतु जिला पेंशन अधिकारी श्री राघवेन्द्र सिंह को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में सहायक कोषालय अधिकारी श्री अजीत शर्मा, सहायक कोषालय अधिकारी श्री विश?वजीत पुषाम तथा श्री धुरवा सिंह की ड्यिटी लगाई गई है। मीडिया, एमसीएमसी तथा पेड न्यूज हेतु पीआरओ श्री अमित श्रीवास्तव को नोडल अधिकारी बनाया गया है। कम्प्यूटरीकरण/आईटी टीम हेतु जिला सूचना विज्ञान अधिकारी सुश्री रानी गलकाटे को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में ई-गवर्नेंस के प्रबंधक श्री विकास सिंह, जिला पंचायत के वरिष्ठ डाटा मैनेजर श्री जे.एल. डोंगरे, जिला षिक्षा केन्द्र के प्रोग्रामर श्री संतोष पाण्डेय, लीड ट्रेनर श्री आनंद मोहन मिश्रा, तहसील अनूपपुर के प्रोग्रामर श्री सुषील कुमार रौतेल, तहसील कोतमा के सहायक प्रोग्रामर श्री प्रभाकर गौतम, तहसील पुष्पराजगढ़ के सहायक प्रोग्रामर श्री जितेन्द्र अहिरवार तथा तहसील पुष्पराजगढ़ की सहायक प्रोग्रामर सुश्री निर्मला धुर्वे की ड्यिटी लगाई गई है।

ऑनलाईन डाटा फीडिंग, ईआरओ नेट तथा ईआरएमएस हेतु संयुक्त कलेक्टर श्रीमती अंजली द्विवेदी को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में जिला निर्वाचन कार्यालय अनूपपुर के सहायक प्रोग्रामर श्री पवन गुप्ता तथा डाटा इन्ट्री ऑपरेटर श्री गोविंद चौधरी की ड्यिटी लगाई गई है। हेल्पलाईन, कन्ट्रोल रूम तथा शिकायत निवारण, ऑनलाईन डाटा फीडिंग, जिला सम्पर्क केन्द्र हेतु संयुक्त कलेक्टर श्रीमती अंजली द्विवेदी को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इनके सहायक के रूप में लोक सेवा प्रबंधन की जिला प्रबंधक श्रीमती सोनू सिंह राजपूत, कृषि विभाग की सहायक संचालक श्रीमती वर्षा त्रिपाठी तथा श्रम निरीक्षक श्रीमती स्नेहा जायसवाल की ड्यिटी लगाई गई है। एसएमएस मॉनीटरिंग एवं कम्युनिकेशन प्लान हेतु एनआरएलएम के जिला प्रबंधक श्री शषांक प्रताप सिंह तथा ई-गवर्नेंस के जिला प्रबबंधक श्री विकास सिंह को नोडल अधिकारी बनाया गया है।

पौधरोपण

अनूपपुर । अधिमान पत्रकार नेतृत्व समिति के अध्यक्ष डल्लू सोनी ने फलदार पौधे रोपे। इस अवसर पर उन्होंने ने लोगों से अपील की कि इस सावन माह के पवित्र महीने में अधिक से अधिक पौधरोपण करें।

01 जून से 26 जुलाई तक जिले में 453.5 मिमी औसत वर्षा दर्ज

अनूपपुर। अधीक्षक भू-अभिलेख अनूपपुर द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इस वर्ष 01 जून 2023 से 26 जुलाई 2023 तक जिले में 453.5 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है। जबकि गत वर्ष 01 जून 2022 से 26 जुलाई 2022 तक जिले में 428.3 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई थी। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया है कि जिले में बीते 24 घंटे में वर्षा निरंक रिकार्ड की गई।

8 अगस्त को व्यौहारी आएंगे राहुल गांधी

फतवा समाचार ◈ उमरिया

कांग्रेस कमेटी के सचिव और पूर्व नेता प्रतिपक्ष ने तैयारियों को लेकर की बैठक

शहडोल जिले के व्यौहारी में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के आगमन को लेकर जिले में तैयारियों और व्यवस्थाओं के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव और पूर्व नेता प्रतिपक्ष ने जिले में कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर चर्चा की और कार्यकताओं से रुबरू हुए। राहुल गांधी को 8 अगस्त को व्यौहारी आना है। जिसको लेकर नेताओं का दौरा चल रहा है?। मंगलवार को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव संजय कपूर और पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल ने कार्यकर्ताओं के साथ सामुदायिक भवन में बैठक की ओर कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। राहुल गांधी के व्यौहारी आगमन को लेकर चर्चा करते हुए कार्यकताओं से बात की। जिला कांग्रेस कमेटी उमरिया के नवीन कार्यकारिणी और ब्लाक अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष सेक्टर अध्यक्ष मोर्चा प्रकोष्ठ और वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं से मिल कर बैठक की। बैठक में जिला संगठन प्रभारी जगदीश सैनी ने भी जिला के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकताओं और युवा कार्यकताओं से चर्चा करते हुए संगठन की रीति नीति जनता तक पहुंचाए और राहुल गांधी के आगमन को लेकर बात की।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डल्लू सोनी द्वारा सांई प्रिंटिस म. नं 19 जिंसी जहांगीराबाद, भोपाल,मप्र, मुद्रित एवं मजिस्ट्रेट बंगला वार्ड नं 9 , जिला अनूपपुर मध्यप्रदेश से प्रकाशित। संवादक-डल्लू सोनी, समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार/न्यायालनी क्षेत्र अधिकार अनूपपुर होगा। मो -9893798715